A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 31 मई, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 268, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

बिन पानी सब सून...

फोटो: ऋतुराज बुड़ावनवाला खाचरौद (उज्जैन)

सुप्रभात

अजनबी शहर में
पता बताने वाला
अगर ज़्यादा सोचे
तो सोच लो
कि वह पता बता नहीं रहा
बना रहा है

जीपीएस पर ज़्यादा भरोसा मत करो
वह भविष्य का पता बताने से पहले
तुम्हारे फ़िलहाल का पता पूछेगा
जो तुम्हें पता नहीं है

लेफ़्ट को राइट कह देने वालों को
अपनी श्रद्धा दो
उन्होंने दिशाओं की निस्सारता को जान लिया है

जान लिया है
भटकने के सत्य को
कि किसी भी दिशा में जाओ
पहुँचना कहीं नही है

सारथी को शुक्रिया दो
कि पता पूछते हुए
उसने रथ को लगातार
लापता के बीहड़ों में उतारे रखा

इससे तुम वो सब देख सके

जिसे देख पाओगे
इसका पता तुम्हें कभी नहीं था।

- आशुतोष दुबे

राजस्थान में रेत का 'बवंडर'

यूपी-बिहार में आंधी **पाकिस्तान से उठे तूफान ने बदला मौसम**

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान के 4 जिलों चूरू, श्रीगंगानगर, बीकानेर और सीकर में शनिवार दोपहर रेतीला तूफान आया है। इसके कारण दिन में ही अंधेरा छा गया। यहां 60-80 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से आंधी चली है। दरअसल, पाकिस्तान से उठे तूफान का असर राजस्थान के बॉर्डर वाले जिलों पर हुआ है। तूफान के कारण दिन में लोगों को वाहनों की हेडलाइट जलानी पड़ गई। इसके कई वीडियो सामने आए हैं। इनमें लोग भागकर घरों में जाते दिखे और घरों को बंद कर लिया। स्थानीय लोगों ने कहा कि ऐसा रेतीला तूफान पहले कभी नहीं देखा। उदयपुर सहित कई जिलों में शनिवार सुबह बारिश हुई। बॉर्डर वाले जिले श्रीगंगानगर में सुबह करीब 11 बजे आई आंधी के कारण शहर में धूल छा गई।

यूपी-बिहार में आंधी-बारिश से 48 मौतें

मौसम विभाग ने कहा कि बिहार, यूपी में सामान्य बारिश हो सकती है, लेकिन बाकी कई हिस्सों में सामान्य से कम बारिश होने की आशंका है। खासकर बारिश पर निर्भर खेती वाले इलाकों में मानसून कमजोर रह सकता है। उत्तर प्रदेश में पिछले 24 घंटे में आंधी-तूफान की वजह से 31 लोगों की मौत हो गई है। सहारनपुर में भारी बारिश के बाद पहाड़ी से तेज बहाव के साथ पानी नीचे आ गया। इससे इनोवा-ट्रैक्टर समेत 10 गाड़ियां बह गईं। आज भी सभी 75 जिलों में बारिश का अलर्ट है। बिहार में पिछले 24 घंटे में आंधी-बारिश और बिजली गिरने से 17 लोगों की मौत हुई है। पटना में बारिश के चलते 4 फ्लाइट डायवर्ट की गईं। जबकि 18 फ्लाइट लेट रहीं। इससे करीब 500 से ज्यादा यात्रियों को परेशानियों का सामना करना पड़ा। कई जगहों पर ट्रेनें भी समय पर रवाना नहीं हो सकीं। मौसम विभाग ने बताया कि मानसून अगले 7 दिनों में केरलम पहुंच सकता है। हालांकि विभाग ने इस साल मानसून के सामान्य से कमजोर रहने का अनुमान जताया है।

होर्मुज छोड़ने को तैयार नहीं है ईरान

- डील पर तेहरान की दो टूक
- कहा-अमेरिका से अभी तक कोई समझौता नहीं

तेहरान (एजेंसी)। ईरान हॉर्मुज स्ट्रेट के प्रबंधन को लेकर अड़ा हुआ है। इसी बीच ईरानी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बाकेई ने स्पष्ट किया है कि अमेरिका के साथ अभी तक किसी भी समझौते को अंतिम रूप नहीं दिया गया है। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, बाकेई ने सरकारी टीवी चैनल आईआरआईबी के साथ एक टेलीफोन इंटरव्यू में अमेरिका के साथ समझौते पर कहा कि दोनों पक्षों के बीच संदेशों का आदान-प्रदान जारी है। यह बयान ऐसे समय आया है जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के साथ संभावित समझौते के लिए अपनी शर्तें सार्वजनिक की हैं। बाकेई ने दोहराया कि बातचीत में ईरान का मौजूदा ध्यान युद्ध को खत्म करने पर है। उन्होंने कहा,इस चरण पर हम ईरान के यूरेनियम संवर्धन या समृद्ध यूरेनियम से जुड़े मुद्दों के विवरण पर कोई बात नहीं कर रहे हैं। होर्मुज स्ट्रेट के संभावित रूप से फिर से खुलने के बारे में बात करते हुए बाकेई ने कहा कि इस स्ट्रेट का भविष्य का प्रबंधन सिर्फ ईरान और ओमान से संबंधित है। इससे पहले एक सोशल मीडिया पोस्ट में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपनी मांगें बताते हुए कहा,ईरान को इस बात पर सहमत होना होगा कि उनके पास कभी भी कोई परमाणु हथियार या बम नहीं होगा।

स्वच्छ सर्वेक्षण में मप्र के 35.69 लाख फीडबैक

सिटीजन फीडबैक में देश में पहले नंबर पर, भोपाल में 3.86 लाख पार

भोपाल (नप्र)। स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 के अंतर्गत संचालित देशव्यापी 'सिटीजन फीडबैक' (नागरिक प्रतिक्रिया) में मध्य प्रदेश पूरे देश में पहले स्थान पर रहा। प्रदेश के 35.69 लाख से अधिक लोगों ने ऑनलाइन माध्यम से अपनी सहभागिता दर्ज कराई। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा, नागरिकों की अटूट जागरूकता और विभागीय अमले की कर्तव्य निष्ठता के समन्वय से ही प्रदेश स्वच्छता के उच्च शिखर पर है। राज्य स्तर पर स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) 2.0 की टीम ने इस वर्ष एक अनूठी '360 डिग्री रणनीति' का क्रियान्वयन किया। इस समेकित कार्ययोजना के अंतर्गत सभी नगरीय निकायों के सोशल मीडिया हैंडल्स के माध्यम से 60 लाख से अधिक लोगों तक पहुंच स्थापित की गई। इसके अतिरिक्त पारंपरिक और आधुनिक संचार माध्यमों से ऑडियो-वीडियो संदेश और घर-घर जाकर चलाए गए सघन जन-जागरूकता अभियानों से समाज के हर वर्ग को इस पुनीत कार्य से जोड़ा गया।

स्वच्छ सर्वेक्षण के तहत भोपाल में इस तरह से पेंटिंग की गई है।

प्रदेश में 1 करोड़ एसएमएस भी हुए

डिजिटल सहभागिता को सुगम और व्यापक बनाने के उद्देश्य से राज्य स्तर से एक करोड़ से अधिक एसएमएस (SMS) भेजे गए। वहीं, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स की भी मदद ली गई। इसके चलते फीडबैक में प्रदेश देश में नंबर पर आ पाया है। भोपाल की बात करें तो पिछले साल 5.1 हजार फीडबैक दिए गए थे लेकिन इस बार इनकी संख्याा 3.86 लाख से अधिक है।

एनडीए में जो शुरू होता है, वो जीवन भर साथ रहता है

- पासिंग आउट परेड में सेना प्रमुख ने 'सेवा परमो धर्मः' का दिया संदेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेशनल डिफेंस एकेडमी (एनडीए) में 150वें कोर्स की पासिंग आउट परेड शनिवार को भव्य रूप से आयोजित की गई। परेड का निरीक्षण सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने किया। इस अवसर पर उन्होंने पासआउट हो रहे कैडेट्स को संबोधित करते हुए अपने 42 वर्षों के सैन्य जीवन के अनुभव साझा किए।

जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कहा कि 150वें कोर्स की पासिंग आउट परेड का निरीक्षण करते हुए आज का दिन मेरे लिए बेहद गौरवपूर्ण और व्यक्तिगत रूप से विशेष है। 42 साल पहले मैं इसी परेड ग्राउंड से गुजरा था। आज जब मैं अपनी वर्दी उतारने की तैयारी कर रहा हूं और आप अपनी वर्दी पहनने जा रहे हैं, तो मैं पूरे यकीन से कह सकता हूं कि एनडीए में जो शुरू होता है, वह जीवन भर आपके साथ रहता है। सेना प्रमुख ने परेड कमांडर, सभी कैडेट्स और पुरस्कार विजेताओं की सराहना की।

उन्होंने 'चीता स्क्वाड्रन' को विशेष बधाई दी और 12 मित्र देशों से आए चार विदेशी कैडेट्स का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि अलग-अलग देशों से आए ये युवा एक ही मूल्यों और एक ही मिट्टी से जुड़कर जा रहे हैं।

एनडीए की नींव है तीनों सेनाओं की एकता

उन्होंने संयुक्तता पर जोर देते हुए कहा कि तीनों सेनाओं की एकता एनडीए की नींव है। उन्होंने युवा अधिकारियों को तीन गुणों रवैया (एटीट्यूड), एडेप्टेबिलिटी और क्षमता (कॉम्पिटेंस) पर विशेष ध्यान देने की सलाह दी। महिला कैडेट्स की उपलब्धि का जिक्र करते हुए आर्मी चीफ ने कहा, महिला कैडेट्स हर मानक पर खरी उतरी हैं। युद्ध और सेवा लिंग-निरपेक्ष होती है। उन्होंने उनके परिवारों का भी आभार व्यक्त किया जिन्होंने उनका समर्थन किया। जनरल द्विवेदी ने प्रशिक्षकों और स्टाफ की मेहनत की तारीफ की और पासआउट कैडेट्स को याद दिलाया कि सेवा परमो धर्मः यही इस पेशे का मूल मंत्र है। एनडीए की पासिंग आउट परेड देश के सबसे प्रतिष्ठित सैन्य कार्यक्रमों में से एक है, जिसमें हर वर्ष सैकड़ों कैडेट थलसेना, नौसेना और वायुसेना में अधिकारी के रूप में शामिल होते हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 31 मई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

वेस्ट बंगाल के सोनारपुर में अभिषेक बनर्जी पर हमला

● लोगों ने पीटा, अंडे फेंके, शर्ट फाड़ी, चोर-चोर के नारे लगाए ● हेलमेट पहनाकर निकालना पड़ा, कार्यकर्ताओं से मिलने गए थे

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के सोनारपुर दक्षिण में टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी से शनिवार शाम को मारपीट हुई है। वे यहां चुनावी हिंसा के पीड़ित टीएमसी कार्यकर्ताओं से मिलने पहुंचे थे। आरोप है कि वहां पहुंचते ही भाजपा कार्यकर्ताओं ने उन्हें घेर लिया और नारेबाजी करते हुए उनके साथ मारपीट कर दी। लोगों ने उन पर पत्थर, जूते और अंडे फेंके, उनकी शर्ट फाड़ दी। अभिषेक को हेलमेट पहनाकर वहां से निकाला गया। बनर्जी बंगाल में सत्ता परिवर्तन के बाद हुई हिंसा से प्रभावित कार्यकर्ताओं और उनके परिवारों से मिलने की यात्रा पर निकले हैं। सोनारपुर में हमले के दौरान बनर्जी पर अंडे और पत्थर फेंके गए, स्थानीय लोगों ने चोर-चोर के नारे लगाए।

बीजेपी पर बनर्जी ने किया पलटवार

सोनारपुर में हमला होने पर अभिषेक बनर्जी ने बीजेपी को निशाने पर लिया है। उन्होंने कहा कि यह सब भाजपा प्रायोजित है। देखो उन्होंने क्या किया है। यह उनके लोकतंत्र का उदाहरण है। एक महीना भी नहीं हुआ है, और पुलिस कहीं दिखाई नहीं दे रही है। आरोप है कि जब अभिषेक बनर्जी सोनारपुर पहुंचे तो उनके ऊपर हमला हुआ। इस दौरे के दौरान बनर्जी पर अंडे और पत्थर फेंके गए।

भारत ने बांग्लादेश को सौंपे 2680 लोगों के नाम

सख्ती का डर, उलटे पांव लौट रहे अवैध घुसपैठिए

कोलकाता (एजेंसी)। भारत में अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों को लेकर सरकार ने अपना रुख बेहद सख्त कर लिया है। विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को स्पष्ट किया कि देश में गैर-कानूनी तरीके से प्रवेश करने वाले और रह रहे सभी विदेशियों के साथ कानून के दायरे में रहकर निपटा जाएगा। नई दिल्ली ने इस दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए

बांग्लादेश को 2,680 से अधिक लोगों की सूची सौंपी है, ताकि उनकी राष्ट्रीयता की आधिकारिक पुष्टि हो सके और उन्हें वापस उनके देश भेजा जा सके। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने अपनी साप्ताहिक मीडिया ब्रीफिंग के दौरान अवैध घुसपैठियों की पहचान और उन्हें वापस भेजने की प्रक्रिया पर विस्तार से बात की।

सदानीरा समागम: देशभर से आये 100 से अधिक कलाकारों की चित्रांकन कार्यशाला

भोपाल। वीर भारत न्यास द्वारा आयोजित सदानीरा समागम विशेष चित्रांकन कार्यशाला में देशभर से लगभग 100 लोक, पारंपरिक और जनजातीय कलाकार अपनी विशिष्ट कला शैलियों के माध्यम से जल संरक्षण, पर्यावरणीय संतुलन और भारतीय सांस्कृतिक विरासत का संदेश दे रहे हैं।

कार्यशाला में पटुआ, कलमकारी, जोगी कलम, मंजूषा, मिथिला (मधुबनी), टिकुली, वारली, पिथोरा और पहाड़ी चित्रकला जैसी विविध लोक एवं पारंपरिक कला शैलियों के कलाकार शामिल हुए। कलाकारों द्वारा तैयार की जा रही कृतियों में नदियों की अविरलता, जल स्त्रोतों का संरक्षण, जल और जीवन का संबंध तथा प्रकृति के प्रति भारतीय समाज की आस्था प्रमुखता से उभरकर सामने आयी।

बिहार के भागलपुर से आए मंजूषा कला के कलाकार पवन कुमार सागर ने अपनी चित्रकला

के माध्यम से जल संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने बताया कि मंजूषा कला बिहार की प्राचीन लोक परंपरा पर आधारित है। उनकी पेंटिंग का प्रमुख विषय वर्षा जल संचयन और भूजल संरक्षण पर केन्द्रित है। उनकी कृति का संदेश स्पष्ट है– 'जल है तो कल है।'

पटना से आयी अरुंधति महतो ने टिकुली कला की ऐतिहासिक यात्रा को साझा किया। उन्होंने बताया कि मौर्यकालीन परंपरा से जुड़ी यह कला कभी विलुप्ति के कगार पर पहुँच गई थी, लेकिन उपेंद्र महारथी के प्रयासों से इसे नया जीवन मिला। आंध्र प्रदेश के अराकू क्षेत्र से आयी युवा जनजातीय कलाकार तुलसीवेणी ने अपनी चित्रकला में ग्रामीण जीवन और जल संघर्ष को उकेरा। उनकी पेंटिंग्स में गाँवों की महिलाएँ दूर-दूर से पानी लाती दिखाई देती हैं। महाराष्ट्र के पालघर जिले से आयी मीनाक्षी वायडा ने वारली कला के माध्यम से आदिवासी जीवन और परंपराओं को चित्रित किया।

हिमाचल प्रदेश के चंबा से आयी ज्योति नाथ ने पहाड़ी चित्रकला, चंबा कलम और कांगड़ा कलम की परंपरा को अपने चित्रों में जीवंत किया। झाबुआ की निर्मला भामोर ने भील पिथोरा कला के माध्यम से आदिवासी समाज की वर्षा और प्रकृति से जुड़ी मान्यताओं को प्रस्तुत किया। कार्यशाला का उद्देश्य कला के माध्यम से समाज को जल संरक्षण और संवर्धन के प्रति जागरूक करना है।

पहले नीट फिर सीबीएसई एसएससी और अब सीयूईटी

● राहुल गांधी बोले-अब तक एक भी परीक्षा ईमानदारी से नहीं करा सकी सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने शनिवार को केंद्र सरकार पर एक बार फिर हमला बोला। यह हमला तब हुआ जब खबरें आई कि तकनीकी गड़बड़ियों के कारण देश भर के कई केंद्रों पर सीयूईटी-यूजी 2026 की परीक्षा रद्द कर दी गई या उसमें देरी हुई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को निशाना बनाते हुए राहुल ने आरोप लगाया कि सरकार नीट, सीबीएसई, एसससी और अब सीयूईटी से जुड़े विवादों का हवाला देते हुए बड़ी राष्ट्रीय परीक्षाओं को निष्पक्ष और कुशलता से आयोजित करने में विफल रही है। एक्स पर

एक पोस्ट में उन्होंने लिखा- नीट, सीबीएसई, एसएससी और आज सीयूईटी चार परीक्षाएं। एक करोड़ बच्चे। एक भी ईमानदारी से आयोजित नहीं हुई। उन्होंने आगे कहा, विश्व गुरु होने का दावा करते हैं, लेकिन देश में एक भी परीक्षा ठीक से आयोजित नहीं कर सकते। मोदी जी ने पूरी शिक्षा व्यवस्था को पूरी तरह बर्बाद कर दिया है। जिस पीढ़ी का भविष्य आप तबाह कर रहे हैं, वही पीढ़ी आपसे इसका हिसाब लेगी।

एनटीए ने स्वीकार की खामी

राहुल की यह टिप्पणी तब आई जब नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने स्वीकार किया कि उसके टेक्नोलॉजी पार्टनर, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज की तरफ से आई एक तकनीकी गड़बड़ी के कारण शनिवार को कई परीक्षा केंद्रों पर सीयूईटी–यूजी 2026 की शुरुआत में देरी हुई। एनटीए के अनुसार, इस समस्या को बाद में सुलझा लिया गया और उम्मीदवारों को पूरा अतिरिक्त समय दिया गया ताकि किसी भी छात्र को कोई नुकसान न हो। हालांकि जांच जारी है।

अरविंद केजरीवाल ने भी किया हमला

सीयूईटी में आई इस बाधा को लेकर सरकार की आलोचना करने में कई विपक्षी नेता राहुल गांधी के साथ शामिल हो गए। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि सरकार परीक्षाओं में सिस्टम की कमियों को ठीक करने के बजाय दिखावे पर ज्यादा ध्यान दे रही है। नीट के प्रश्न पत्र लाने–ले जाने के लिए वायु सेना के विमानों का इस्तेमाल करने के केंद्र के फैसले का जिक्र करते हुए केजरीवाल ने सवाल उठाया कि क्या ऐसे उपायों से सच में पेपर लीक रुक पाएगा। उन्होंने एक्स पर लिखा, नीट में पेपर लीक रोकने के लिए वायु सेना के विमानों का इस्तेमाल किया जाएगा। क्या इससे पेपर लीक रुक जाएगा। हमारी सरकार अनपढ़ लोगों की तरह बात क्यों कर रही है।

स्व. कैलाश नारायण सारंग की जयंती पर देशभर में मनाया जाएगा मातृ-पितृ भक्ति दिवस

पूर्व संध्या पर होगा वृद्धजनों का सम्मान, विशाल भजन संध्या एवं सेवा कार्यक्रमों का आयोजन

भोपाल। भारतीय संस्कृति में माता-पिता को देवतुल्य माना गया है। उनके सम्मान, सेवा और आशीर्वाद को जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य माना जाता है। इन्हीं संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से भाजपा के संस्थापक सदस्य, पूर्व सांसद एवं जनसेवा के पर्याय रहे स्व. श्री कैलाश नारायण सारंग जी की जयंती 2 जून को इस वर्ष भी देशभर में मातृ-पितृ भक्ति दिवस के रूप में श्रद्धा, सम्मान और सेवा भाव के साथ मनाई जाएगी।

सहकारिता, खेल और युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग के आह्वान पर इस अवसर पर देशभर में वृद्धजनों के सम्मान, सेवा और संस्कार जागरण के विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा द्वारा विभिन्न राज्यों में वृद्धजनों के चरण पखारकर, उन्हें शाल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया जाएगा। साथ ही सेवा, समर्पण और श्रद्धा के अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे।

मंत्री श्री सारंग ने बताया कि पूज्य पिताजी स्व. श्री कैलाश नारायण सारंग का सम्पूर्ण जीवन समाज की सेवा के लिए समर्पित रहा। उनका सपना था कि समाज का कोई भी वृद्ध स्वयं को अकेला महसूस न करे और प्रत्येक घर में माता-पिता को सर्वोच्च सम्मान मिले। उन्होंने कहा कि मातृ-पितृ भक्ति दिवस केवल एक आयोजन नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति, परिवार व्यवस्था और संस्कारों को सशक्त बनाने का संकल्प है, जो नई पीढ़ी को अपने माता-पिता एवं बुजुर्गों के प्रति कर्तव्यबोध का संदेश देगा।

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा द्वारा भी स्व. कैलाश नारायण सारंग जी की जयंती को देशभर में मातृ-पितृ भक्ति दिवस के रूप में मनाया जाएगा। विभिन्न राज्यों में वृद्धजनों के सम्मान के साथ-साथ सेवा, स्वास्थ्य, सहयोग एवं जनकल्याण के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

मंत्री श्री सारंग ने बताया कि स्व. कैलाश सारंग ने अपने पैतृक ग्राम बरेली में वृद्धाश्रम की स्थापना कर बेसहारा बुजुर्गों को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्रदान किया।

नरेला विधानसभा में तीन दिवसीय सेवा कार्यक्रम

नरेला विधानसभा के विभिन्न वार्डों में 1 से 3 जून तक वृद्धजनों का सम्मान और अन्य सेवा कार्य आयोजित किए जाएंगे। दिनांक 01 जून को वार्ड 76 (खेड़ापति हनुमान मंदिर), 79 (सरदार पटेल स्कूल), 75 (केनरा बैंक के सामने करोंद), 77 (शिव मंदिर पुलिस चौकी करोंद), 78 (पानी की टंकी के पास विश्वकर्मा नगर करोंद), 37 (मरई माता मंदिर द्वारका नगर) व 38 (साईंराम कॉलोनी) में वृद्धजनों का सम्मान किया जाएगा। वार्ड 38, साईंराम कॉलोनी में विशाल भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा। दिनांक 02 जून को वार्ड 71 (स्वामी विवेकानंद चौराहा), वार्ड 39-40 (चाणक्यपुरी), वार्ड 59 (अन्ना नगर), वार्ड 58 (सर्जना पार्क), वार्ड 44 (हनुमान मंदिर आचार्य नरेंद्र देव नगर), वार्ड 70 (पिंक टॉवर के सामने), वार्ड 69-41 (नर्मदा चौराहा) एवं वार्ड 36 (जैन मंदिर के पास शंकराचार्य नगर) में वृद्धजनों का सम्मान किया जाएगा। दिनांक 03 जून को वार्ड 38 कैलाश सारंग पार्क एकतापुरी में सायं 07-00 बजे स्व. कैलाश नारायण सारंग की मूर्ति का अनावरण, भजन संध्या एवं विशाल भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

हिन्दी पत्रकारिता द्विशताब्दी पर जारी हुआ स्मारक डाक टिकट

नई दिल्ली। हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने पर भारत सरकार ने हिन्दी के पहले समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' और उसके सम्पादक युगल किशोर शुक्ल के सम्मान में एक स्मृति डाक टिकट और प्रथम दिवस आवरण जारी किया। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) तथा माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में आईजीएनसीए सभागार में आयोजित कार्यक्रम में 'हिन्दी पत्रकारिता के 200 साल की महागाथा' ग्रंथ का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुभकामना संदेश भेजा, जिसे आईजीएनसीए के अध्यक्ष 'पद्म भूषण' रामबहादुर राय ने पढ़कर सुनाया। अपने संदेश में प्रधानमंत्री ने कहा, वर्ष 1826 में 'उदन्त

मार्त्तणड' के प्रकाशन के साथ आरम्भ हुई हिन्दी पत्रकारिता की द्विशताब्दी की यात्रा का यह अहम पड़ाव भारत की चेतना, विचार और जनजागरण का उत्सव है।÷

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि पत्रकारिता के इतिहास की गाथा भारत के इतिहास की भी गाथा है।पत्रकारिता राष्ट्र चेतना का आंदोलन है। सिंधिया ने पत्रकारिता में अपने पूर्वजों के योगदान का भी स्मरण करते हुए कहा, जमाना बदल जाए, लेकिन पत्रकारिता का धर्म नहीं बदलना चाहिए।आयोजन में 'हिन्दी पत्रकारिता = 200 साल की महागाथा' का विमोचन भी हुआ। 'पद्मश्री' विजयदत्त श्रीधर और डॉ. सच्चिदानंद जोशी द्वारा संपादित यह ग्रंथ हिन्दी पत्रकारिता की दो शताब्दियों की व्यापक यात्रा का दस्तावेज है। इस पुस्तक में हिन्दी पत्रकारिता के 30 दिग्गजों के लेख शामिल हैं। कार्यक्रम के दौरान डॉ. श्रीकांत सिंह की पुस्तक 'हिन्दी पत्रकारिता के हिन्दीतर उन्नायक' का भी लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का एक अन्य प्रमुख आकर्षण हिन्दी पत्रकारिता के दो सौ वर्षों की यात्रा को चित्रित करने वाली विशेष प्रदर्शनी रही। आगंतुको ने 'उदन्त मार्तण्ड' से लेकर समकालीन पत्रकारिता तक की विकास-यात्रा को एक ही स्थल पर देखने का अवसर प्राप्त किया।

3 जून को सीएम पद की शपथ लेंगे डीके शिवकुमार !

● मंत्रिमंडल में भी बड़ा फेरबदल, राहुल-प्रियंका रहेंगे मौजूद

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक में चल रही सियासी उथल-पुथल के बीच बड़ा अपडेट सामने आया है। सूत्रों का कहना है कि डीके शिवकुमार 3 जून यानी बुधवार को मुख्यमंत्री पद की शपथ ले सकते हैं। उनके साथ 10 अन्य मंत्री भी शपथ ले सकते हैं। इसके बाद 18 जून के बाद कैबिनेट का विस्तार किया जा सकता है। राज्यसभा चुनाव होने के बाद कर्नाटक में कैबिनेट विस्तार की संभावना है। राज्य

सरकार में चल रहे नेतृत्व परिवर्तन के बीच पार्टी नेतृत्व शनिवार को होने वाली कांग्रेस विधायक दल की एक महत्वपूर्ण बैठक की तैयारी कर रहा है। सूत्रों का कहना है कि डीके शिवकुमार की कैबिनेट में 50 फीसदी नए चेहरे हो कते हैं कर्नाटक विधान परिषद के चीफ विप सलीम अहमद ने शुक्रवार को कहा कि कैबिनेट के गठन,सीएलपी बैठक के बाद कांग्रेस आलाकमान की ओर से लिया जाएगा।

कम नहीं होगा सिद्धारमैया का दबदबा- राजनीतिक जानकारों का मानना है कि विधायकों, पिछड़ा वर्ग समूहों और जमीनी कार्यकर्ताओं पर श्री रमैया की मजबूत पकड़ सत्ता के औपचारिक हस्तांतरण के बाद भी राज्य कांग्रेस की दिशा तय करती रहेगी। कांग्रेस आलाकमान रमैया के प्रभावशाली अहिंडा सामाजिक गठबंधन (जिसमें अल्पसंख्यक, पिछड़ा वर्ग और दलित शामिल हैं) को छेड़ने से बच रहा है। यह गठबंधन कर्नाटक में पार्टी की चुनावी सफलता का मुख्य केंद्र रहा है। राज्यसभा की भूमिका स्वीकार करने के बजाय कर्नाटक की राजनीति में ही सक्रिय रहने का रमैया का फैसला साफ संकेत देता है कि वे राज्य के राजनीतिक मामलों में अपना सीधा प्रभाव बनाए रखना चाहते हैं।

लोकतंत्र में हर आवाज के लिए जगह चिंता की बात नहीं

● कॉकरोच जनता पार्टी पर आ गई आरएसएस की प्रतिक्रिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोशल मीडिया पर इन दिनों तहलका मचा रहे सैटायरिकल ग्रुप कॉकरोच जनता पार्टी को लेकर चल रहे विवाद पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भी बयान सामने आया है। आरएसएस के वरिष्ठ नेता सुनील आंबेकर ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि एक लोकतांत्रिक समाज में अलग-अलग राय और सार्वजनिक चर्चाएं होना स्वाभाविक प्रक्रिया है और इसे चिंता या झटके के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। आपको बता दें कि सीजेपी का सोशल मीडिया पर सीजेपी के

बीच में काफी क्रज है। इंस्टाग्राम पर इसके फॉलोअर्स की संख्या भारतीय जनता पार्टी सहित कई प्रमुख राजनीतिक दलों से भी आगे निकल गई है।

आरएसएस के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने समाचार एजेंसी एएनआई से बातचीत में कहा कि भारतीय लोकतंत्र में सभी तरह की आवाजों और भावनाओं को समाहित करने की पूरी क्षमता है। सुनील आंबेकर ने कहा, हम एक जागरुक समाज हैं और लोकतांत्रिक प्रक्रिया का पालन करते हैं।

युवाओं को देश पर पूरा भरोसा

जब आंबेकर से पूछा गया कि क्या आरएसएस को इस तरह के मुद्दों पर हस्तक्षेप करना चाहिए, तो उन्होंने कहा कि हमारी लोकतांत्रिक संस्थाएं, राजनीतिक दल और मीडिया इन मामलों से खुद निपटने में पूरी तरह सक्षम हैं। आंबेकर ने कहा, राजनीतिक दल सक्षम हैं और हमारी कोई भी संस्था कमजोर नहीं है। हमारा सिस्टम इन मामलों को संभालने की ताकत रखता है, इसलिए मुझे नहीं लगता कि संघ को ऐसे मामलों में तुरंत कूदने की जरूरत है। उन्होंने आगे कहा कि देश के युवाओं यानी जेन–जी के मन में बहुत उम्मीदें हैं और उन्हें भारत पर पूरा भरोसा है। आरएसएस भी देश की युवा शक्ति पर पूरा विश्वास रखता है।

मलक्का स्ट्रेट के पास भारत का मेगा प्लान

● चीन के लिए सिरदर्द बनेगा ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट!

बीजिंग (एजेंसी)। ईरान युद्ध के कारण होर्मुज जलडमरूमध्य के प्रभावी रूप से बंद होने के कारण वैश्विक ऊर्जा संकट पैदा हुआ है। इसने भारत और चीन दोनों दो बराबर रूप से परेशान किया है। हालांकि, दोनों देशों के पास मौजूद रणनीतिक भंडारों ने हालात को काबू में रखा है। इसके बावजूद इस युद्ध ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की कमजोरी और व्यापार के अहम समुद्री मार्गों के महत्व को दुनिया के सामने रख दिया है। होर्मुज जलडमरूमध्य संकट ने भारत को लंबे समय से अनिश्चितता के दौर से गुजर रहे ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट को फिर से रफ्तार दे दी है। इसके तहत भारत ग्रेट निकोबार द्वीप को रणनीतिक रूप से अहम मलक्का जलडमरूमध्य के पास एक बड़े डिफेंस और लॉजिस्टिक हब में बदलना चाहता है।

मलक्का के जरिए चीन पर हावी होने की कोशिश- साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार, होर्मुज जलडमरूमध्य से लेकर मलक्का जलडमरूमध्य तक जाने वाले समुद्री मार्ग चीन के आर्थिक विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। इस समुद्री मार्ग में किसी भी तरह की रुकावट चीन की अर्थव्यवस्था को गंभीर झटका दे सकती है। यही कारण है कि चीन भारत के इस प्रोजेक्ट को लेकर इतना परेशान है। उसे आशंका है कि अगर संकट के समय भारत निकोबार द्वीप समूह से मलक्का जलडमरूमध्य से होकर गुजरने वाले चीनी समुद्री यातायात को बंद कर देता है तो इससे उसे बड़ा झटका लग सकता है। यह झटका इतना बड़ा होगा कि चीन परेशान हो जाएगा।

ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट से भारत को होगा फायदा

ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट के जानकारों का कहना है कि इससे भारत की सैन्य ताकत में जबरदस्त इजाफा होगा। इतना ही नहीं, उनका यह भी दावा है कि भारत इस प्रोजेक्ट के माध्यम से चीन की आपूर्ति श्रृंखलाओं को नियंत्रित करने या बाधित करने में सक्षम हो जाएगा। यह चीन की मलक्का दुविधा को और गहरा करेगा। मलाका दुविधा एक रणनीतिक कमजोरी है जिसे 2003 में चीनी नेतृत्व ने पहचाना था। यह चीन की ऊर्जा और व्यापारिक आयात के लिए मलाका जलडमरूमध्य पर अत्यधिक निर्भरता को दर्शाती है। चीन अपनी आयातित ऊर्जा का 80 प्रतिशत और अपने कुल व्यापार का दो–तिहाई हिस्सा मलाका जलडमरूमध्य के रास्ते ही प्राप्त करता है। यही कारण है कि चीन लगातार कुछ वर्षों से हिंद महासागर और उसके आसपास के इलाकों में अपनी नौसैनिक उपस्थिति को बढ़ा रहा है। उसने पाकिस्तान, श्रीलंका, म्यांमार, बांग्लादेश में सैन्य अड्डे भी बनाए हैं। इसके अलावा, चीन अपने सर्वे ऑपरेशन (जासूसी जहाजों) के बड़े नेटवर्क के जरिए हिंद महासागर का अध्ययन कर रहा है। इससे उसे पानी की स्थितियों, धाराओं और समुद्र तल के बारे में अपनी समझ को बेहतर बनाने में मदद मिल रही है। ये सभी काम अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत मान्य हैं।

प्रदेश में अब 16 जून से खुलेंगे सरकारी स्कूल

स्कूल चलें हम अभियान भी चलेगा, गर्मी को देखते हुए शिक्षकों का अवकाश भी बढ़ाया

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में शैक्षणिक सत्र की शुरुआत 16 जून से होगी। इसके साथ ही इसी दिन से स्कूल चलें हम अभियान का दूसरा चरण शुरू होगा जो 30 जून तक चलेगा। इसके साथ ही स्कूल शिक्षा विभाग ने अत्यधिक गर्मी और हीट वेव की स्थिति को देखते हुए शिक्षकों के लिए 7 दिन का अवकाश बढ़ाया है। यानि अब शिक्षकों को 1 जून की बजाय 7 जून से विद्यालय में उपस्थिति देनी होगी।

प्रदेश में जनगणना कार्य में लगे शिक्षकों द्वारा विद्यालय संचालन की समय सीमा बढ़ाने की मांग की जा रही थी। इसके बाद अब सरकार ने इसके लिए निर्देश जारी कर दिए हैं। स्कूल चलें हम अभियान के दौरान सबसे अधिक फोकस ड्राप आउट बच्चों को फिर विद्यालय से जोड़ने और शाला प्रारंभ उत्सव मनाए जाने का काम होगा।

राज्य शिक्षा केंद्र ने सभी कलेक्टरों को इस संबंध में निर्देश जारी कर कहा है कि अभियान के अंतर्गत विद्यालयों में विशेष गतिविधियां आयोजित कराएं। इसका उद्देश्य सौ फीसदी प्रवेश सुनिश्चित करना, ड्रॉपआउट बच्चों को पुनः विद्यालय से जोड़ना तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है।

निर्देशों में कहा है कि ग्रीष्मकालीन अवकाश खत्म होने के बाद 16 जून से शासकीय एवं सांदीपनि विद्यालयों में शाला प्रारंभ उत्सव आयोजित किया जाएगा। अभियान के दौरान हर पात्र बच्चे का एडमिशन किया जाएगा तथा विद्यालय छोड़ चुके बच्चों की पहचान कर उनका पुनः प्रवेश कराया जाएगा। जिला स्तर पर कलेक्टर इसकी नियमित समीक्षा करेंगे।

चाइल्ड ट्रेकिंग सिस्टम से होगी मॉनिटरिंग

राज्य शिक्षा केंद्र ने कहा है कि शिक्षकों के लॉगिन पर प्रदर्शित ड्रॉपआउट विद्यार्थियों की सूची के आधार पर घर-घर संपर्क कर बच्चों को स्कूल से जोड़ा जाए। हमारे शिक्षक ऐप के माध्यम से चाइल्ड ट्रैकिंग सिस्टम का उपयोग कर विद्यालय से बाहर बच्चों की निगरानी की जाएगी। अभियान के दौरान विद्यार्थियों को समय पर पाठ्यपुस्तक वितरण करने, पुस्तकों की ऑनलाइन एंट्री करने और पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता पर फीडबैक दर्ज करने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही आंगनवाड़ी केंद्रों और प्राथमिक विद्यालयों के को-लोकेशन संबंधी कार्यों को भी शीघ्र पूरा किया जाएगा।

विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं की कमी नही हो

विद्यालयों में मिशन अंकुर के अंतर्गत बच्चों की सीखने की क्षमता में सुधार के लिए विशेष कार्ययोजना बनाई जाएगी। बालिका शौचालयों की साफ-सफाई, रनिंग वाटर की उपलब्धता, पेयजल व्यवस्था और अन्य मूलभूत सुविधाओं को दुरुस्त रखने के निर्देश भी जारी किए गए हैं। शाला प्रारंभ उत्सव के दौरान नया प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों का स्वागत किया जाएगा। प्री-प्राइमरी से कक्षा 8वीं तक के विद्यालयों में बाल सभाओं का आयोजन होगा तथा पहले दिन विशेष भोजन की व्यवस्था भी की जाएगी। अभिभावकों को विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध शासकीय योजनाओं और सुविधाओं की जानकारी दी जाएगी।

मप्र के 1.5 लाख शिक्षकों को टीईटी पास करना अनिवार्य

सुप्रीम कोर्ट ने कहा– बच्चों के भविष्य से समझौता नहीं, पात्रता परीक्षा जरूरी, 1 साल का अतिरिक्त समय

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के डेढ़ लाख से ज्यादा शिक्षकों को शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) देनी ही पड़ेगी। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को रिव्यू पिटीशनों पर फैसला सुनाते हुए कहा कि बच्चों के बेहतर शैक्षणिक विकास और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का टीईटी पास करना जरूरी है।

कोर्ट ने यह भी साफ किया कि यह फैसला सिर्फ मध्यप्रदेश तक सीमित नहीं है, बल्कि देशभर के इन-सर्विस शिक्षकों पर लागू होगा। जिन राज्यों में अब तक पुराने शिक्षकों को टीईटी से छूट मिली हुई थी, वहां भी अब यह आदेश प्रभावी माना जाएगा। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने राहत देते हुए परीक्षा पास करने की समय-सीमा 2 साल से बढ़ाकर 3 साल कर दी है। अब शिक्षकों को 31 अगस्त 2028 तक टीईटी पास करने का मौका मिलेगा।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- बच्चों का हित सर्वोपरि- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि समीक्षा के अधीन आदेश में कोई त्रुटि नहीं है और याचिकाकर्ता राहत पाने के हकदार नहीं हैं। कोर्ट ने माना कि बड़ी संख्या में शिक्षकों की सेवा प्रभावित होने से शिक्षा व्यवस्था पर असर पड़ सकता है, लेकिन बच्चों का हित सर्वोपरि है।

कोर्ट ने कहा कि कानून व्यवहारिक भी होना चाहिए। बच्चों की पढ़ाई की निरंतरता बनाए रखने के लिए सीमित राहत देते हुए टीईटी पास करने की समय-सीमा 2 साल से बढ़ाकर 3 साल की जा रही है।

सभी राज्यों को साल में दो बार टीईटी कराने के निर्देश– सुप्रीम कोर्ट ने सभी राज्यों को निर्देश दिए हैं कि टीईटी परीक्षा साल में कम से कम दो बार आयोजित की जाए। कोर्ट ने कहा कि शिक्षकों को पर्याप्त अवसर मिलना चाहिए। साथ ही स्पष्ट कर दिया कि अब आगे कोई अतिरिक्त समय नहीं दिया जाएगा। इसके साथ ही सभी रिव्यू पिटीशन खारिज कर दी गईं।

पहले 2 साल की समय-सीमा तय की थी

सुप्रीम कोर्ट ने अंजुमन इशात-ए-तालीम ट्रस्ट मामले में इन-सर्विस शिक्षकों के लिए टीईटी अनिवार्य रखने का फैसला बरकरार रखा। इससे पहले 1 सितंबर 2025 के आदेश में कोर्ट ने दो साल के भीतर पात्रता परीक्षा पास करने को कहा था। अब इसमें एक साल की अतिरिक्त मोहलत दी गई है। कोर्ट ने अपने आदेश में यह भी कहा कि टीईटी सिर्फ नौकरी की शर्त नहीं, बल्कि बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की संवैधानिक आवश्यकता है।

मध्यप्रदेश भवन में दो दिवसीय समर वर्कशॉप का सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ समापन

भोपाल (नप्र)। चाणक्यपुरी स्थित मध्यप्रदेश भवन में आयोजित दो दिवसीय समर वर्कशॉप का समापन रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ गत दिवस संपन्न हुआ। कार्यशाला में प्रतिभागियों के लिए हीटलेस कुकिंग (बिना आग के खाना बनाना), फैब्रिक पेंटिंग, मधुबनी पेंटिंग कला तथा डीआईवाई क्राफ्ट सत्र जैसी रचनात्मक एवं ज्ञानवर्धक गतिविधियों का आयोजन किया गया।

समापन समारोह में सामान्य प्रशासन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री शिवशेखर शुक्ला की गरिमामयी उपस्थिति रही। उन्होंने प्रतिभागियों के उत्साह और रचनात्मक प्रतिभा की सराहना करते हुए ऐसे आयोजनों को बच्चों और युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण बताया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पद्मश्री कालूराम बामनिया द्वारा प्रस्तुत कबीर गायन तथा श्री महेश कुलश्रेष्ठ की मनमोहक 'फूलपाती' नृत्य प्रस्तुति रही। इन सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने उपस्थित दर्शकों को मध्य प्रदेश की समृद्ध लोक एवं सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराया।

समारोह के दौरान ट्रेज़र हंट प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए तथा कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण-पत्र वितरित कर सम्मानित किया गया।

दो दिनों तक चली इस कार्यशाला ने प्रतिभागियों को सीखने, सृजनात्मकता विकसित करने और मनोरंजन के साथ नई गतिविधियों का अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया। कार्यक्रम का समापन उत्साह, उमंग और मधुर स्मृतियों के साथ हुआ।

युवा देश की आशा और सामर्थ्य : राज्यपाल पटेल

भावी जीवन में संवेदना के साथ उत्कृष्टता पर बल दे, राज्यपाल सिस्टेक ग्लोरी समारोह में हुए शामिल

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने कहा है कि युवा हमारे देश की आशा और सामर्थ्य हैं। उनके विचार और चरित्र ही देश का भविष्य तय करेंगे। जरूरी है कि हमारे युवा जो भी कार्य करें उसमें उत्कृष्टता और संवेदना पर विशेष बल दें। उन्होंने कहा कि जीवन में संवेदना का भाव ही सबसे महत्वपूर्ण है। ममता और करुणा का मोल पैसों से कहीं ज्यादा है। इसलिए भावी जीवन में सफलता की ऊंचाईयों पर चढ़ते कभी भी उन लोगों को नहीं भूलें जिन्होंने आपका सहयोग किया है।

राज्यपाल श्री पटेल शनिवार को रविन्द्र भवन के हंस ध्वनि सभागार में आयोजित सिस्टेक ग्लोरी समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। राज्यपाल का कार्यक्रम में शॉल और स्मृति चिन्ह् भेंट कर अभिनन्दन किया गया। प्रारम्भ में राज्यपाल श्री पटेल ने दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि जीवन में हर पहलु के दो पक्ष होते हैं। सफलता सही दिशा में सही प्रयासों में है। उन्होंने कहा कि सफलता अकेले की नहीं होती है। समाज के अनेक लोगों का प्रत्यक्ष और परोक्ष रुप से

योगदान होता है। उन्होंने एक दृष्टांत के माध्यम से बताया कि जीवन में कभी भी कोई ऐसा काम नहीं करें जिससे माता-पिता को कष्ट हो। उन्होंने कहा कि जीवन में उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक है। निष्ठावान प्रयास ही सबसे महत्वपूर्ण है।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि ग्लोरी आयोजन केवल नौकरी प्राप्त करने का उत्सव नहीं है। जीवन में नई जिम्मेदारियों और नए संकल्पों की शुरुआत का भी प्रसंग है। प्लेसमेंट प्राप्त करने वाले युवाओं का दायित्व है कि भावी जीवन में अपने ज्ञान और प्रतिभा के उपयोग से गरीब और वंचित लोगों के जीवन में खुशहाली लाने के समाज के प्रयासों में योगदान दे। आपकी मेहनत और ईमानदारी से ही आपकी व्यक्तिगत, संस्था की और देश की खुशहाली और उन्नति होगी। देशभक्ति का सबसे प्रभावी तरीका सेवा भाव और समर्पण के साथ अपने कार्यों और कर्तव्यों को करना है।

सागर समूह के चेयरमैन श्री सुधीर अग्रवाल ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारत की उन्नति के लिए कड़ा परिश्रम ही एकमात्र तरीका है। उन्होंने कहा कि कर्म का फल अवश्य मिलता है। समूह के प्रबंध संचालक श्री सिद्धार्थ सुधीर अग्रवाल ने संस्थान की कार्य संस्कृति से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया। उन्होंने दृष्टांत के द्वारा बताया कि सकारात्मक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है। इसलिए असफलताओं से कभी भी घबराएं नहीं। स्वागत उद्बोधन निदेशक डा. ज्योति देशमुख ने दिया। आभार प्रदर्शन ग्रुप हेड कॉरपोरेट रिलेशंस सुश्री प्राची श्रीवास्तव ने किया।

मुख्यमंत्री के विजन को साकार कर रहा ग्लोबल स्किल पार्क

कौशल प्रशिक्षण से अंतर्राष्ट्रीय रोजगार तक पहुंच रहे मध्यप्रदेश के युवा

भोपाल(नप्र)। संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल पार्क कौशल विकास की उस नई कार्य संस्कृति का सशक्त उदाहरण बनकर उभरा है, जहां प्रशिक्षण केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं है, बल्कि युवाओं को वैश्विक उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने की दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में विकसित हो रहा कौशल तंत्र अब युवाओं को अंतरराष्ट्रीय रोजगार अवसरों से भी जोड़ रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा प्रदेश में कौशल विकास को औद्योगिक विकास, निवेश और रोजगार से जोड़ते हुए युवाओं के लिए नए अवसर निर्मित किए जा रहे हैं। इसी दिशा में कौशल विकास एवं रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल के मार्गदर्शन में प्रदेश में कौशल आधारित प्रशिक्षण व्यवस्थाओं को अधिक उद्योगोन्मुख और रोजगारपरक बनाया गया है, जिसके सकारात्मक परिणाम अब सामने आने लगे हैं। इसी क्रम में संस्थान के बैच-9 के तीन विद्यार्थियों का चयन हंगरी में रोजगार के लिए हुआ है। चयनित विद्यार्थी हंगरी पहुंचकर अपने पेशेवर दायित्वों का निर्वहन प्रारंभ कर चुके हैं। यह उपलब्धि प्रदेश में विकसित हो रहे आधुनिक कौशल प्रशिक्षण मॉडल और उद्योगोन्मुख शिक्षा व्यवस्था को रेखांकित करती है। हंगरी में रोजगार प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में एडवांस्ड मैकेनिकल टेक्नोलॉजी पाठ्यक्रम के विद्यार्थी लकी साहू तथा एडवांस्ड मैकेनिकल एंड इलेक्ट्रिकल सर्विसेज पाठ्यक्रम के विद्यार्थी रौशन कुमार एवं मयंक जांगिड़ शामिल हैं। सिवनी, चंपारण और दौसा जैसे क्षेत्रों से आने वाले इन विद्यार्थियों ने यह सिद्ध किया है कि अवसर और गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण मिलने पर युवा वैश्विक स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बना सकते हैं।

भोपाल में खौफनाक ट्रेंड: 3 दिन में चाकूबाजी की 7 वारदातें, हत्या के प्रयास के मामलों में रिकॉर्ड 200 प्रतिशत का उछाल

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल की सड़कों पर इन दिनों मामूली विवादों में खून बहना आम बात हो गया है। शहर में चाकूबाजी की घटनाओं में अचानक बड़ा उछाल आया है। आलम यह है कि पिछले महज तीन दिनों के भीतर शहर के अलग-अलग इलाकों में चाकूबाजी के 7 मामले दर्ज किए गए हैं, जिसमें कोतवाली इलाके में हुआ रोड रेज का एक मामला भी शामिल है।

पुलिस के अपने ही आंकड़े बता रहे हैं कि इस साल 1 जनवरी से 30 अप्रैल के बीच हत्या के प्रयास (धारा 307) के मामलों में पिछले साल के मुकाबले करीब 200त्न की बढ़ोतरी हुई है।

धौंस और भाईगिरी दिखाने के चक्कर में अपराध

पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, इन दिनों युवाओं में गुस्सा और आक्रामकता बेहद बढ़ गई है। पुरानी रंजिशों के अलावा चौराहे या सड़क पर किसी से मामूली बात पर बहस होने पर भी सीधे धारदार हथियारों से हमले किए जा रहे हैं। चिंता की बात यह है कि इन वारदातों में आदतन अपराधियों के साथ-साथ पहली बार अपराध करने वाले युवक और नाबालिग भी शामिल हैं। पुलिस का कहना है कि युवा अपने दोस्तों या इलाके में एक धौंस और बोल्ड इमेज बनाने के चक्कर में इन खूनी वारदातों को अंजाम दे रहे हैं, ताकि उनका दबदबा कायम हो सके। अकेले इस महीने में हत्या के प्रयास के 20 और गैर-इरादतन हत्या के प्रयास के 21 मामले दर्ज हो चुके हैं। कमिश्नर, भोपाल ने कहा भोपाल में चाकूबाजी की हर घटना को हम बेहद गंभीरता से ले रहे हैं। अपराधियों के मन में कानून का डर पैदा करने के लिए सबसे सख्त कानूनी धाराएं लगाई जा रही हैं। आंकड़ों में यह बढ़ोतरी इसलिए भी दिख रही है क्योंकि हम हर छोटी-बड़ी शिकायत पर कड़ी एफआईआर दर्ज कर रहे हैं। हमारा मकसद सिर्फ आंकड़ों को सुधारना नहीं, बल्कि इस तरह के अपराध को जड़ से खत्म करना है।

बचाव के लिए पुलिस की नई रणनीति

बढ़ते अपराधों पर लगाम लगाने के लिए भोपाल पुलिस ने अब अपने खुफिया तंत्र को मजबूत करना शुरू कर दिया है। शहर के सार्वजनिक स्थानों पर पुलिस के हेल्पलाइन नंबर और विशेष त्तक्रकोड चटकाए जा रहे हैं, ताकि आम जनता बिना किसी डर के असामाजिक तत्वों की शिकायत सीधे पुलिस से कर सके। इसके अलावा आदतन अपराधियों की नियमित चेकिंग की जा रही है और माहौल बिगाड़ने वालों को जिला बदर करने की कार्रवाई भी शुरू हो गई है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आज जम्मू कश्मीर के उप राज्यपाल श्री मनोज सिन्हा से उनके श्रीनगर निवास पर पुष्प-गुच्छ भेंट कर स्वागत किया।

नदियों के उद्गम स्थलों को स्वच्छ और सुरक्षित रखना हम सभी का कर्तव्य: मंत्री श्री पटेल

अमरकंटक धाम में तीन दिवसीय 'स्वच्छता व कुण्ड सेवा अभियान में स्वयं किया श्रमदान

भोपाल(नप्र)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास और श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि माँ नर्मदा केवल आस्था की प्रतीक नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन और अस्तित्व का आधार हैं। हमारी नदियों के उद्गम स्थलों को स्वच्छ, सुरक्षित और समृद्ध बनाए रखने में प्रत्येक नागरिक को अपना बहुमूल्य योगदान देना चाहिए। मंत्री श्री पटेल ने यह विचार अमरकंटक धाम स्थित माँ नर्मदा नदी के पावन उद्गम स्थल पर 29 से 31 मई तक आयोजित इस विशेष स्वच्छता अभियान में श्रमदान के दौरान व्यक्त कियें। मंत्री श्री पटेल ने विशेष बल देते हुए कहा कि नदियों का संरक्षण केवल धार्मिक दायित्व नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के सुरक्षित जीवन का आधार है, क्योंकि यदि आज हम जल स्रोतों और उद्गम स्थलों को संरक्षित करेंगे, तभी आने वाली पीढ़ियाँ जल संकट से बच सकेंगी।

मंत्री श्री पटेल ने स्वयं उपस्थित होकर जनभागीदारी के साथ सक्रिय रूप से श्रमदान किया। मणिनागेंद्र सिंह फाउंडेशन एवं निर्विकार पथ के सेवाभावी कार्यकर्ताओं के सहयोग से

संचालित इस अभियान में बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिकों, श्रद्धालुओं और सामाजिक संगठनों ने हिस्सा लिया। सभी ने मिलकर उद्गम और कुण्ड क्षेत्र की स्वच्छता, संरक्षण तथा सेवा कार्यों में अपना योगदान दिया, जिससे यह अभियान क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का एक बड़ा माध्यम बनकर उभरा है।

उल्लेखनीय है कि मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल लंबे समय से जल संरक्षण, जल स्रोतों के संवर्धन और प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान के माध्यम से पूरे प्रदेश में जल संरचनाओं के पुनर्जीवन, नदियों की स्वच्छता और जनजागरण के कार्यों को व्यापक गति मिली है। अमरकंटक में माँ नर्मदा के उद्गम स्थल पर किया गया यह श्रमदान उसी पर्यावरण-संरक्षण के संकल्प का जीवंत उदाहरण है, जो समाज में सकारात्मक चेतना का संचार करेगा और जनसहभागिता से जल संरक्षण के इस प्रयास को और अधिक मजबूती प्रदान करेगा।

कृतज्ञता का उजाला

दृष्टिकोण

संध्या राजपुरोहित

जीवन केवल घटनाओं का क्रम नहीं, बल्कि अनुभवों का एक गहरा सरोवर है जिसमें सुख की चमकती लहरें भी हैं और दुख की अथाह गहराइयाँ भी। हम इन गहराइयों में उतरते हैं, कभी टूटते हैं, कभी संभलते हैं। परंतु प्रश्न यह है कि क्या हर क्षति, हर वियोग, हर असफलता केवल शोक या दुख का कारण है? या उसके भीतर कोई ऐसी रोशनी भी छिपी है, जो हमें जीवन को नए अर्थों में देखने का साहस देती है? 'शोक/दुख नहीं, शुक्रिया करें' यह विचार केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि जीवन को समझने की एक परिपक्व, संतुलित और मानवीय दृष्टि है।

जितनी बार भी टूटना होता है, वह सबक होता है, तो संभलना दरअसल जिंदगी के नये अध्यायों को सीखना। तो इसके प्रति कृतज्ञता और धन्यवाद का भाव मानवीय संवेदनाओं के लिहाज से एक सहज प्रतिक्रिया होना चाहिए। मगर भावुकता में हम कई बार इन पहलुओं को नजरअंदाज कर देते हैं और इस तरह एक सुंदर संवेदना के जरूरी पक्ष के अहसास से दूर रह जाते हैं1

हमारे सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में शोक की अपनी गरिमा और गहराई है। यह हमारे प्रेम, लगाव और संबंधों की सच्चाई को दर्शाता है। जब कोई अपना बिछड़ता है, तो आँसू आना स्वाभाविक हैं; जब कोई सपना अधूरा रह जाता है, तो पीड़ा भी स्वाभाविक है। मगर समस्या तब जन्म लेती है, जब यही दुख की स्थिति हमारे भीतर स्थायी निवास बना लेती है, जबकि वह हमें वर्तमान से काट देता है और जीवन की संभावनाओं को धुंधला कर देता है। यहीं शुक्रिया का भाव एक 'प्रकाशस्तंभ' की तरह उभरता है।

शुक्रिया याने कृतज्ञता। यह वह सूक्ष्म किंतु शक्तिशाली भाव है, जो हमें हर अनुभव के भीतर छिपे अर्थ को पहचानने की दृष्टि देता है। अगर कोई व्यक्ति हमारे जीवन से विदा हो गया, तो क्या केवल उसका जाना ही हमारे स्मरण का केंद्र होना चाहिए? या फिर यह भी कि उसने हमारे जीवन को अपनी उपस्थिति से समृद्ध किया कुछ अनमोल क्षण दिए, कुछ सीखें दीं, कुछ स्मृतियाँ दीं, जो आज भी हमारे अस्तित्व में धड़कती हैं और इसके प्रति उसके प्रति कृतज्ञता का भाव होना चाहिए।

जब समाज इस दृष्टि को अपनाता है, तो संबंधों की प्रकृति में एक गहरा परिवर्तन आता है। हम खोने के भय में जीने के बजाय, पाने के सौभाग्य को महसूस करने लगते हैं। हम शिकायतों के बोझ से मुक्त होकर, कृतज्ञता के उजाले में जीना सीखते हैं। शोक हमें अतीत में जकड़ता है, जबकि शुक्रिया हमें वर्तमान में जड़ें जमाने और भविष्य की ओर आशा से देखने की प्रेरणा देता है।

हमारे सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में शोक की अपनी गरिमा और गहराई है। यह हमारे प्रेम, लगाव और संबंधों की सच्चाई को दर्शाता है। जब कोई अपना बिछड़ता है, तो आँसू आना स्वाभाविक हैं, जब कोई सपना अधूरा रह जाता है, तो पीड़ा भी स्वाभाविक है। मगर समस्या तब जन्म लेती है, जब यही दुख की स्थिति हमारे भीतर स्थायी निवास बना लेती है, जबकि वह हमें वर्तमान से काट देता है और जीवन की संभावनाओं को धुंधला कर देता है। यहीं शुक्रिया का भाव एक 'प्रकाशस्तंभ' की तरह उभरता है।

आज का समय, जहाँ तेज़ी, प्रतिस्पर्धा और एकाकीपन का दबाव बढ़ता जा रहा है, वहाँ यह दृष्टिकोण और भी आवश्यक हो उठता है। हम अक्सर यह गिनते रहते हैं कि हमें क्या नहीं मिला- समय, समझ, साथ, अवसर। अगर हम ठहरकर यह देखने लगें कि हमें क्या मिला है, तो हमारी दृष्टि ही बदल जाती है। यही परिवर्तन हमें भीतर से समृद्ध करता है।

सामाजिक स्तर पर भी यह विचार अत्यंत सार्थक है। जब कोई आपदा आती है, चाहे वह प्राकृतिक हो या मानवीय, तो समाज शोक में डूब जाता है, जो स्वाभाविक है, लेकिन अगर उसी क्षण हम यह भी देखें कि उस संकट ने हमें क्या सिखाया - मानवता का हाथ थामना, एक-दूसरे के लिए खड़ा होना, संवेदनाओं को जीवित रखना, तो हम उस पीड़ा को केवल अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत के रूप में भी देख सकते हैं।

व्यक्तिगत जीवन में असफलताएँ भी इसी दृष्टि की माँग करती हैं। हर हार केवल हार नहीं होती। वह एक संकेत होती है रुककर सोचने का, दिशा बदलने का और स्वयं को नए सिरे से गढ़ने का। अगर हम अपनी असफलताओं के प्रति भी कृतज्ञ हो सकें, तो वे हमारे विकास की सीढ़ियाँ बन जाती हैं।

'दुख नहीं मनाएं, शुक्रिया करें' का आशय यह नहीं है कि हम अपने दुख को नकार दें या संवेदनहीन हो जाएँ। बल्कि इसका अर्थ है दुख को पूरे मन से स्वीकार करना, पर उसमें स्थायी रूप से डूब नहीं जाना । यह एक संतुलन की साधना है जहाँ आँसू भी अपनी जगह पर हैं और मुस्कान भी अपना अर्थ नहीं खोती।

अगर यह भाव हमारे परिवारों और समाज में स्थान पा जाए, तो हमारी अगली पीढ़ियाँ जीवन को अधिक सकारात्मक और संतुलित दृष्टि से देख सकेंगी। वे विपरीत परिस्थितियों में टूटेंगी नहीं, बल्कि उनमें अवसर खोजेंगी। वे संबंधों को बोझ नहीं, बल्कि उपहार मानेंगी।

आखिर जीवन एक अनवरत यात्रा है, जहाँ हर मोड़ पर कुछ छूटता है, कुछ मिलता है। अगर हम हर छूटने पर केवल शोक मनाएंगे, तो इस यात्रा की सुंदरता से वंचित रह जाएँगे, लेकिन अगर हम हर मिलने और छूटने दोनों के लिए 'शुक्रिया' कहना सीख जाएँ, तो जीवन केवल एक संघर्ष नहीं, बल्कि एक उत्सव बन सकता है। इसलिए जब भी जीवन हमें किसी कठिन मोड़ पर लाकर खड़ा करे, तो एक पल ठहर कर, उसके बाद मुस्कुराकर हमें यह कहना चाहिए कि 'शुक्रिया'', क्योंकि हर अनुभव, चाहे वह कैसा भी हो, हमें कुछ सिखाने, कुछ गढ़ने, और कुछ नया बनाने ही आता है।

जाति तोड़ो : देश जोड़ो

विचार

विजय जोशी

लेखक भेल भोपाल के पूर्व ग्रुप महाप्रबंधक हैं।

हर देश, समाज या धर्म का विभिन्न समुदाय में विभक्त होना कोई अचरज की बात नहीं, अपितु स्वाभाविक है। यह मनुष्य का जन्मजात नैसर्गिक गुण है। लेकिन समय की मांग पर एक होना उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। अनेकता में एकता ही किसी राष्ट्र की विशेषता है। ऐसा न कर पाने की दशा पतन का मार्ग प्रशस्त करती है। इतिहास ने इस तथ्य को समय समय पर हम सबको समझाया और जो इस तथ्य एवं सत्य को समझ गया वही सफल हो सका ।

राणा सांगा और बाबर में भयानक युद्ध चरम पर था। उन दिनों युद्ध नियमों का पालन करते हुए लड़ाई केवल दिन के समय सूर्यास्त तक ही की जाती थी। सूर्यास्त के साथ युद्ध थम जाता था एवं सैनिक अपने डेरे में प्रस्थान कर लेते थे। एक दिन संध्याकाल में बाबर जब टहल रहे थे तो उन्हें राणा के कैंप में अनेक जगहों से धुंआ आसमान की ओर उठता दिखाई दिया। उन्हें लगा शायद आग लग गई है और अपने सेवक से पूरी बात पता करके आने को कहा।

गुप्तचर पूरी बात पता करके तुरंत लौटे और अपने सम्राट को यह शुभ समाचार सुनाया था कि जहांपनाह सारे सैनिक हिन्दु हैं और एक जगह एक साथ बैठकर खाना नहीं खाते। अपनी अपनी जाति के अनुसार खेमों में बंटे हैं और एक दूसरे का छुआ भी नहीं खाते।

यह सुनते ही बाबर प्रसन्न हो गया और अपने सेनापति मीर बांकी को बुलाकर कहा - अब हमारी फतह को कोई नहीं रोक सकता। भला वे हमसे क्या लड़ेंगे जो सैनिक एक साथ मिल बैठकर खाना भी नहीं खा सकते। समय के साथ यह बात सत्य सिद्ध हुई। अनेक वीर सैनिकों से सुसज्जित परमवीर राणा सांगा की सेना काल कवलित हो गई। राजा हार गया तथा देश में मुगल साम्राज्य का आगाज़ हुआ।

बात का संदर्भ स्पष्ट है। हम आज भी विभिन्न सम्प्रदाय, जाति, उपजाति एवं समुदायों में विभाजित हैं। अपनी सामूहिक शक्ति का हमें भान ही नहीं है। सनातन दर्शन की सबसे बड़ी संदेशवाहक धर्मग्रंथ गीता में भी प्रतिभा के आधार पर कर्म के चुनाव की सुविधा प्रतिपादित है। कर्म और केवल कर्म। जाति व्यवस्था का कहीं कोई संदर्भ नहीं।

चतुर-वर्ण्यं मया सृष्टम् गुण-कर्म-विभागशः
तस्य कर्तारम् अपि माम् विद्याकर्तारम् अव्ययम्

(मैंने गुणों और कर्मों के विभाजन के अनुसार चारों वर्णों की रचना की है। यद्यपि मैं उनका सृष्टिकर्ता हूँ, फिर भी यह जान लो कि मैं न तो कार्य करता हूँ और न ही बदलता हूँ)

आज़ादी उपरांत के कालखण्ड में जाति से मुक्ति का आव्हान प्रखर राष्ट्रवादी राजनेता डॉ. राममनोहर लोहिया द्वारा किया गया था अपने ' जाति तोड़ो' अभियान के माध्यम से, न कि किसी पारंपरिक धर्म की ध्वजा का दम्भ भरनेवाली किसी भी संस्था या समुदाय द्वारा। कुल मिलाकर आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी समस्या ज्यों की त्यों है। यही कारण है हमसे अनेक वर्षों बाद आजाद देश हमसे कई गुना आगे निकल गए हैं और हम आज भी तमाम तथाकथित प्रगति के बावजूद विभक्ति के जाल में उलझे हुए हैं ।

लघुकथा

फैंटेसी

रामेश्वरम तिवारी

आर्यावृत का परम प्रतापी समदर्शी सम्राट सत्यव्रत अशोक वृक्ष के नीचे आसन लगाए आँखें बंदकर ध्यान-मुद्रा में बैठा ही था कि उसी समय कहीं से उड़ता हुआ एक कौआ आया और वृक्ष की फुनगी पर बैठकर काँव-काँव करने लगा। उसके कर्कश स्वर को सुनकर राजा के कान खड़े हो गए। राजा ने धीरे से अपनी बंद पलकें खोली, पल भर को एक नज़र वृक्ष की टहनी पर बैठे कौए को गौर से देखा और विनम्रतापूर्वक उससे वहाँ से उड़कर किसी दूसरे वृक्ष पर जाकर बैठने का अनुरोध किया।

इस पर अपनी आपत्ति दर्ज करते हुए कौआ बोला- 'राजन! यह वृक्ष प्रकृति की संपदा है। हम पक्षियों का आश्रय स्थल है और रही बात यहाँ से अन्यत्र चले जाने की, तो मेरी जगह पर आप क्यों नहीं चले जाते।'

राजा के ह्रदय में कौए की वाणी शूल की तरह चुभी, पर सम्राट ने अपमान का घूँट पीते हुए पुनः निवेदन किया- 'शनि महाराज! यह राजमहल का एकमात्र उद्यान है। भला, हम इसको छोड़कर अन्यत्र कहाँ पर जाएँगे।' इस पर कौए ने राजन पर तरस खाते हुए कहा- 'ठीक है, ठीक है... यदि तुमको यह उद्यान छोड़कर कहीं जाने में दिक़्क़त है, तो मैं ही चला जाता हूँ, पर जाने से पहले तुम्हें मेरे एक प्रश्न का उत्तर देना होगा।'

'यह जो तुम्हारे देश में विभिन्न धर्मावलंबी रहते हैं। आजकल इनके बीच में अपनी धार्मिक मान्यताओं, पूर्वाग्रहों और पहचान को लेकर रोज-रोज खटखट हो रही है। क्या इसका कोई बाण नुस्ख़ा तुम्हारे पास है?' कौए के इस अनपेक्षित प्रश्न को सुनकर सम्राट का दिमाग़ चकरा गया। उसने अपनी आँखें बंद की, मन को समाधिस्थ किया और बोला- 'मैं खुद इस समस्या को लेकर बड़े दिनों से जूझ रहा हूँ, पर मुझे इसका कोई सर्वमान्य हल नहीं सूझ रहा है। कृपया अगर आपके पास कोई समाधान हो, तो आप ही सुझाएँ।'

सम्राट की बेचारगी को देखकर कौआ बड़ा खुश हुआ। उसने ज़ोर से काँव-काँव का उच्चार किया। जिसे सुनकर देखते ही देखते आसमान में कौओं की फौज जमा हो गई और सभी ने मिलकर इतना ज़ोर से शोर मचाया कि बेचारे सम्राट के कान बहरा गए...!

प्रेम, अकारण नहीं

कहानी

मेघा राठी

आज सोच रही हूँ, अगर कोई मुझसे पूछे कि तुम उससे प्रेम क्यों करती हो, तो क्या जवाब दूँगी?

क्या कहूँगी कि वह असाधारण है? नहीं।

क्या कहूँगी कि उसने मेरे लिए दुनिया बदल दी? यह भी नहीं।

सच तो यह है कि उसने मेरे लिए कुछ भी नाटकीय नहीं किया। उसने पहाड़ नहीं हटाए, समंदर नहीं पार किए। उसने बस मेरे साथ चलना चुना – बराबरी से, बिना मुझे पीछे छोड़े, बिना मुझे आगे धकेले।

वह बहुत साधारण है। सुबह उठकर वही चाय, वही अख़बार, वही दफ्तर की भागदौड़। लौटते समय सब्ज़ी लेते हुए दाम पर मोलभाव करना। महीने के अंत में हिसाब जोड़ते हुए माथे पर हल्की रेखाएँ। उसकी ज़िंदगी में रोमांच कम है, ज़िम्मेदारियाँ ज़्यादा।

पर मैं जब उसे देखती हूँ तो मुझे उसके चेहरे पर थकान से ज्यादा ईमानदारी दिखती है।

मुझे याद है एक शाम मैं बहुत टूटी हुई थी। वजह बड़ी नहीं थी पर भीतर का बोझ बहुत था। मैं बोलती जा रही थी, उलझी हुई, बिखरी हुई, शायद कुछ अनुचित भी। वह चुपचाप सुनता रहा। बीच-बीच में उसकी भौंहें सिकुड़तीं, जैसे सब समझ नहीं पा रहा। पर उसने मुझे रोका नहीं। न कहा कि 'इतनी सी बात है। '

बस अंत में इतना कहा , 'तुम थक गई हो। '

उसने मेरी समस्या हल नहीं की पर उसने मेरी हालत पहचान ली और कभी-कभी, पहचाना जाना ही सबसे बड़ी राहत होता है।

वह मुझे प्रभावित करने की कोशिश नहीं करता। उसे पता भी नहीं कि प्रभाव कैसे डाला जाता है। वह बस अपना होना जीता है। उसके पास प्रेम जताने के बड़े तरीके नहीं हैं। पर वह यह याद रखता है कि मुझे गुलाबजामुन पसंद है । वह यह देख लेता है कि मेरी आवाज़ में आज थोड़ी थकावट है।

उसकी यह छोटी-छोटी सावधानियाँ मेरे लिए किसी बड़ी घोषणा से कम नहीं।

कभी-कभी मैं सोचती हूँ, अगर वह थोड़ा और चमकदार होता, थोड़ा और महत्वाकांक्षी, थोड़ा और अभिव्यक्त – तो क्या मैं उससे ज़्यादा खुश होती? शायद नहीं। क्योंकि उसकी चमक कम है, पर स्थिर है। उसकी महत्वाकांक्षा सीमित है, पर उसमें हम शामिल हैं। उसकी अभिव्यक्ति कम है, पर उसका व्यवहार स्पष्ट है।

उसने मुझे ऊँचाइयों का वादा नहीं दिया, पर गिरने की इजाज़त भी नहीं दी। उसने मुझे कहा नहीं कि 'तुम सबसे अलग हो, '

पर उसने कभी मुझे सामान्य कहकर छोटा भी नहीं किया।

मैं उसके साथ अभिनय नहीं करती। मुझे मजबूत बने रहने का नाटक नहीं करना पड़ता। अगर मैं चिड़चिड़ी हूँ, तो वह इसे मेरे स्वभाव की स्थायी परिभाषा नहीं बनाता। अगर मैं रोती हूँ, तो वह मुझे कमजोर नहीं कहता।

उसके पास समाधान कम हैं, धैर्य ज़्यादा है और धैर्य आज के समय में दुर्लभ है।

लोग पूछते हैं, 'इतना भी क्या है उसमें? '

मैं सोचती हूँ, कैसे समझाऊँ कि प्रेम हमेशा कारणों से नहीं होता। वह किसी की उपस्थिति से होता है। उससे होता है कि जब रात के दो बजे अचानक डर लगे, तो कोई बगल में साँस लेता हुआ मिले। उससे होता है कि जब दुनिया थोड़ी कठोर लगे, तो घर का दरवाज़ा खुलते ही कोई परिचित शांति मिल जाए।

वह मेरे जीवन का नायक नहीं है। वह मेरे जीवन का आधार है और आधार अक्सर दिखता नहीं।वह बस होता है – चुपचाप, अडिग।

मैं उसके प्रेम में डूबी नहीं हूँ। डूबना अस्थिर होता है, उसमें घबराहट भी होती है।

मैं उसके प्रेम में बसी हूँ। जैसे कोई घर में बसता है – दीवारों की आदत हो जाती है, रोशनी की दिशा पहचान में आने लगती है, और खिड़की से आती हवा अपनेपन की लगती है।

हाँ, वह साधारण है। पर उसके साथ मेरा जीवन असुरक्षित नहीं है। और शायद एक स्त्री के लिए सबसे बड़ा असाधारण यही है कि उसे कहीं लौटने की जगह मिल जाए जहाँ वह हर रूप में स्वीकार हो।

लघुकथा

सुरेश सौरभ

सादी प्लेटें

एक, दो, तीन ...सत्रह.. चौबीस.. पचास...देख लीजिए सर पूरी पचास हैं। ' 'ठीक है भाई अभी इतनी ही रखो। अगर कम पड़े, तो हमें बोल कर ही लगाना। ' 'जी सर ओके।'

घरेलू कार्यक्रम के आयोजक मुखिया ने दूसरी बार सादी प्लेटें अपने सामने गिन-गिन कर लगवायीं-उसके चेहरे की रंगतें अदल-बदल रही थीं, माथे पर कुछ बल पड़ रहा था, लेकिन हर्षित चेहरे से आते-जाते मेहमानों का अभिवादन करते हुए, उनकी कुशल-क्षेम वह पूछ रहा था, जैसे कोई अभिनेता बार-बार रिटेक के बाद अलग-अलग मूड में अभिनय की तरतीब में लगा हो। उसे मैं कभी कनखियों से देखता, कभी पार्टी में चिलबिल-चिलबिल करते बच्चों को, जो रैस्टोरेन्ट की इस घरेलू पार्टी में अपने सामने टेबिलों पर पूरी-पूरी प्लेटें विभिन्न व्यंजनों से सजाये बैठे थे। कुछ बच्चे तो आपस में एक-दूसरे की प्लेटों से मीठी-मीठी शरारतें करते हुए खा-पी रहे थे। अगर फ्री का सुस्वादु व्यंजन हो, फ्री हाथ हो, फ्री लांसर खाने का तौर-तरीका हो-तो सेल्फियां वहाँ खुद-ब-खुद चक्कर लगाने लगती हैं। कुछ युगल जोड़े एक-दूसरे की प्लेटों से टूंग-टूंग कर हँसी-ठिठोली करते हुए खा-पी रहे थे। मेरा माथा ठनका, आजकल लोग भी दूसरे के पैसों को बिलकुल पानी सा समझते हैं-अरे! जब यह घर के बच्चे एक दूसरे का जूठा-अनूठा खा रहे हैं-युगल जोड़े एक-दूसरे का जूठा खा रहे हैं, तो फिर बेवजह प्लेटों की संख्या बढ़ाकर..खाना खराब कर...कौन सी शिष्टता-विशिष्टता है? शरारतों, ठिठोलियों के वातावरण में खोकर आज का एक इंसान, दूसरे इंसान के दिल का हाल क्या जाने?

खाने के लिये मैं आगे बढ़ा, अपने डगमगाते हाथों से, गिनती कर ऊपर-नीचे रखीं गयी,उन प्लेटों को एकबारगी देखते हुए, एक प्लेट चुनी, उसमें डिस्पोजेबल कटोरियां रखीं-खाना परोसा, कुछ कदम बढ़कर पत्नी की ओर बढ़ाया- 'बिटिया नाश्ता कर चुकी है, शायद अब थोड़ा-मोड़ा खाये, उसे खिला दो-अपने हाथों से, फिर इसी में मैं भी खा लूँगा।

' उसने मौन स्वीकृति दी। शायद मेरी तजवीज़ का मर्म कुछ-कुछ पत्नी समझ गयी। बेटी को अपने हाथों से खिलाते हुए वह भी खाने लगीं।...पार्टी की रौनकों की निगहबाजी करते हुए, जाने क्यों मेरी नज़र बार-बार उन सादी प्लेटों की ओर चली जातीं, जहाँ से लोग प्लेटें लेकर भोजन पाने की जद्दोजहद में लगे थे। आयोजक मुखिया वहीं प्लेटों के समीप खड़ा था। ये वेटर भी बड़े अजीब होते हैं, आंखें चाहे जितनी चौकन्नी रहें, प्लेटों का गड़बड़ घोटाला कर ही देते हैं, ऐसा मैंने कहीं से सुन रखा था। शायद इसी कारण प्लेटों के आस-पास वह भटकते नजर आ रहे हैं।

भीड़ बढ़ रही थी।..लोगों का पूरा-पूरा परिवार आ रहा था। लोकल की पार्टी है, शायद इसलिए भीड़ बढ़ी। अरे! अरे यह क्या? वह नौजवान वेटर फिर से आयोजक के कान में कुछ फुसफुसाने लगा। ऐसे ही फुसफुसाने के बाद इसने सादी प्लेटें फिर लगाई थीं, हाँ लग रहा सादी प्लेटें खत्म हो रही हैं।

ओह! अंदाज़ा सही निकला। आयोजक फिर से अपने सामने गिन-गिन कर सादी प्लेटें लगवा रहा था। उनकी जुगलबंदी से सब बेफिक्र हैं, सब खाने में लगे हैं। हास-परिहास में लगे हैं। ध्वनि विस्तारक भी मस्त है।

तभी मैं एकदम शॉक्ड हुआ, अरे! पत्नी कहीं गलती प्लेट डस्टबिन में न डाल दे। - 'और खाओगी। कुछ और लोगी? '

पत्नी हड़बड़ी में मुंह पोंछते हुए,थोड़ा त्योरियां चढ़ाकर बोली- 'नहीं बस। ' 'ठीक है। प्लेट इधर लाओ। '

बेटी खाकर अपने हमउम्र बच्चों के साथ खेलने-मचलने लगी। प्लेट की डिस्पोजेबल कटोरियां मैंने अलग कीं। रोटियों के बचे पीस प्लेट के किनारे किये। उसमें सब्जियों की कटोरियां और थोड़ा पुलाव आदि बढ़ाकर टेबल पर आया, खाने लगा। लेकिन मेरी नजर बार-बार सादी प्लेटों की ओर जाती, तो कभी आयोजक के चेहरे पर ठहर जाती। मुझे लग रहा था, वह कुशल अभिनेता की तरह बढ़िया अभिनय कर रहा है। ओह! वह युवक सादी प्लेटें फिर गिनवा रहा है। उसकी पेशानी पर बल था। अब मैं अपनी प्लेट का भोजन खत्म करके पार्टी से निकल रहा था। पीछे से मेहमानों की हंसी-ठहाकों की आवाजें, मेरे कानों से टकरा रहीं थीं, पर पता नहीं क्यों वह हंसी-ठहाके मेरे हृदय में शूल से चुभ रहे थे। वह सादी प्लेटें, आयोजक का पेशानियों से भरा चेहरा, किन्हीं तिनकों सा मेरी आंखों में खरक रहा था।

पुस्तक समीक्षा

हेमंत पाल

बंटवारे की पीड़ा के बाद बची मोहब्बत

भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उसकी भाषाई विविधता है। हिन्दी, बंगाली, मराठी, तमिल, मलयालम, पंजाबी, उर्दू और सिंधी जैसी अनेक भाषाओं में ऐसा श्रेष्ठ साहित्य रचा गया, जो अपने समय, समाज और मनुष्य की संवेदनाओं का गहरा दस्तावेज है। दुर्भाग्य यह है कि भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य का हिंदी में अपेक्षित स्तर पर अनुवाद नहीं हो पाता। ऐसे समय में सिंधी के चर्चित उपन्यास 'रात्रि का दूसरा पहर' का हिंदी अनुवाद साहित्य प्रेमियों के लिए स्वागतयोग्य घटना है। साहित्य अकादमी से सम्मानित लेखक हरि हिमथानी के लगभग दो दशक पहले लिखे गए इस उपन्यास को हाल ही में अशोक मनवानी ने हिंदी पाठकों तक पहुंचाया है। राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद, भारत सरकार के सहयोग से प्रकाशित यह कृति देश के विभाजन की त्रासदी के बीच मानवीय संबंधों और प्रेम की अनश्वरता को अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत करती है।

उपन्यास का कथानक भारत-पाक विभाजन के उस दौर में विकसित होता है, जब दोनों देशों में भय, हिंसा, विस्थापन और असुरक्षा का वातावरण था। लोग धर्म और पहचान के आधार पर बंट रहे थे। लेकिन, मनुष्य के भीतर का प्रेम, अपनापन और भावनात्मक जुड़ाव तब भी समाप्त नहीं हुआ था। यही इस उपन्यास की मूल संवेदना है। लेखक ने बड़ी खूबसूरती से व्यक्त किया कि राजनीतिक सीमाएं इंसानों को अलग कर सकती हैं, दिलों के रिश्तों को नहीं बांट सकती।

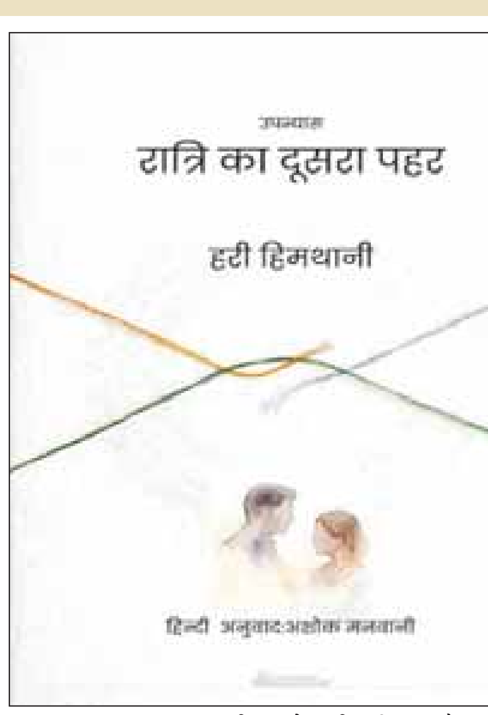

कहानी का नायक ऐंशी एक युवा सिंधी हिंदू युवक है, जो परिस्थितियों और भावनाओं के द्वंद्व में जीता है। उसके जीवन में दो स्त्रियां आती हैं जुहरा और रेमी। जुहरा एक मुस्लिम युवती है, जबकि रेमी विवाहित क्रिश्चियन महिला है। इन तीनों पात्रों के माध्यम से लेखक ने प्रेम के विभिन्न आयामों को बहुत सहजता से उकेरा है। रेमी, ऐंशी और जुहरा के संबंधों को एक भावनात्मक आधार देती है, लेकिन इसी क्रम में ऐंशी स्वयं रेमी के प्रति भी आकर्षित होने लगता है। यह आकर्षण केवल दैहिक नहीं, बल्कि आत्मीयता और भावनात्मक निकटता से उपजा है।

उपन्यास की सबसे बड़ी शक्ति इसके पात्रों की मानवीयता है। यहां संबंधों में कोई कृत्रिम नाटकीयता नहीं दिखाई देती। रेमी अपने पति ओलाफ के साथ ऐंशी के बीच सहज संबंध बनाए रखती है। तीनों के बीच संवाद, हास्य, शायरी और आत्मीयता का वातावरण पाठक को बांधकर रखता है। लेखक ने प्रेम को किसी सामाजिक बंधन या धार्मिक पहचान से ऊपर रखकर प्रस्तुत किया है। कहानी का सबसे मार्मिक पक्ष तब सामने आता है, जब विभाजन की भयावह परिस्थितियों में ऐंशी को कराची छोड़कर भारत आना पड़ता है। सिंध में हिंसा और असुरक्षा बढ़ चुकी है। ऐसे समय में जान और धर्म बचाना ही सिंधी हिन्दुओं की पहली प्राथमिकता बन जाता है। ऐंशी बिना जुहरा से अंतिम मुलाकात किए भारत रवाना हो जाता है और यही अधूरापन उसके भीतर लंबे समय तक बना रहता है।

वर्षों बाद अजमेर में दोनों की आकस्मिक मुलाकात उपन्यास को एक भावनात्मक ऊंचाई प्रदान करती है। जुहरा अपने पति और परिवार के साथ दरगाह शरीफ आई है और स्टेशन पर उसकी मुलाकात ऐंशी से हो जाती है। इस प्रसंग में लेखक ने अत्यंत सादगी और गरिमा के साथ उन भावनाओं को व्यक्त किया है, जिन्हें शब्दों से अधिक आंखें समझती हैं। दोनों के बीच कोई नाटकीय संवाद नहीं, बल्कि मौन का एक गहरा रिश्ता दिखाई देता है। यही मौन इस उपन्यास की सबसे बड़ी ताकत बन जाता है।

'रात्रि का दूसरा पहर' केवल प्रेम कहानी नहीं है, बल्कि यह मानवीय संबंधों की गरिमा, सांप्रदायिक सौहार्द और विभाजन की पीड़ा का संवेदनशील दस्तावेज भी है। लेखक ने यह स्थापित किया कि निस्वार्थ प्रेम और आपसी सम्मान किसी भी धर्म या सीमा से कहीं अधिक बड़े होते हैं। हिंदी अनुवाद में अशोक मनवानी की मेहनत स्पष्ट दिखाई देती है। भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और मूल संवेदना के अनुरूप है। यह उपन्यास पाठक को अंत तक बांधे रखता है और पढ़ने के बाद लंबे समय तक भीतर एक गहरी उदासी और आत्मीयता छोड़ जाता है।

पुस्तक : रात्रि का दूसरा पहर (सिंधी)
लेखक : हरि हिमथानी
हिंदी अनुवाद : अशोक मनमानी
मूल्य : 200 रुपए
प्रकाशक : राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद, नई दिल्ली

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

स्वतंत्र सृजन को आतुर कलाकारों की दुनिया

हमारा देश भारत तमाम नये-नये समस्याओं से रोज दो-चार हो रहा था। किसान, सिपाही, जमींदार सभी रोज बनते नये कानूनों से परेशान थे ऐसी स्थिति में कला किस हालत में रही होगी सहज ही समझा जा सकता है। उसके बाद 1857 और उसके बाद का यह वही समय था जब भारत संपन्न होने के बावजूद लुटेरों की वजह से विपन्नावस्था को प्राप्त हो चुका था, हाँ आप चाहे जो भी कहें पर मैं तो उन्हें लुटेरा ही कहूँगा। तड़प रहा था भारत विदेशियों के चंगुल में। हालांकि 57 के विद्रोह के बाद सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक लगभग सभी स्तरों पर भारी स्थिति में परिवर्तन होने लगे थे। भारतीय धर्म में हस्तक्षेप से बचने तथा भारतीय राजाओं की रियासतों के सुरक्षित होने की बातें भी सामने आई पर प्रशासनिक स्तर पर अधिक कठोरता के प्रावधान भी बनें।

आधुनिक चित्रकला को तत्कालीन साहित्य से विलग नहीं माना जा सकता। कलाकार साहित्यकारों से प्रभावित तो साहित्यकार कलाकारों से प्रभावित नज़र आ रहे थे फलतः बदलाव होना ही था और हुआ भी। दर्शक के दर्शन और उनके प्रभाव से बेखबर वो अपने स्वतंत्र सृजन पर ध्यान देने में लगे थे। डर नामक बिमारी को कलाकारों ने जीत लिया था। शुरू में कलाएं सत्ता के दबाव में पलीं। पनपीं जरूर पर खुलकर खिल नहीं सकीं। तमाम वादों से भी प्रभावित रहीं। प्रमुख व्यक्तियों के शबीह चित्रों तक सिमट कर रह गई थी कला या फिर फूल-पत्ती, बाग-बगीचों, धर्म के इर्द-गिर्द घूमता रहा कलाकार। समय बीतता गया कलाकार की छटपटाहट ने उसे लगातार झकझोरना जारी रखा। अवस्था असहनीय स्तर तक पहुँच गई। इस बीच समकालीन साहित्य भी प्रभाववाद की बात कर रहा था। मामूली से मामूली विषय, प्रसंग को लेकर साहित्यकार विशेष लेखनशैली से उसको इतना महत्वपूर्ण बना दे रहे थे कि सौंदर्य शब्द-शब्द से झलक उठे। वर्णनात्मक शैली में विशेष लेखन साधारण से साधारण विषय को भी विशेष बना दे रहे थे। साधारणतः दिनचर्या भी लेखनीय जादू के सहारे पाठकों तक अच्छी पैठ बना पाने में सफलता हासिल करने लगी थी। सामान्य भी विशेष बन सकता है के सूत्र के सहारे प्रभाववाद अपने कदम बढ़ा रहा था, शायद यही समय की मांग भी थी। परिवर्तन लगभग रास आने लगी थी, दबी जुबान में ही सही आम पाठकों और दर्शकों के बीच इसकी चर्चा होने लगी थी जबकि अधिकतर आलोचकों का समर्थन उन्हें नहीं मिल रहा था। साहित्यकारों की भांति कलाकारों को भी साधारण से साधारण विषयों, बिखरी पड़ी हुई वस्तुओं, दीन-हीन, निरीह या थके-हारे मनुष्यों को विशेष तरीके से बनानें में आनंद आने लगा। वस्तु चित्रण, जीवन चित्रण सहित लगभग सभी चित्रों में प्रकाश के क्षणिक से क्षणिक पल पर भी काम होने लगा था। प्रकाश के बदलते अवस्था को फलक पर कैद कर लेने की होड़ सी मच गई थी। कलाकार प्रकृति के सान्निध्य में जाकर विषय के सामने घंटों बैठकर सृजन करता था हालांकि उस पर यथार्थवादी तमगा भी लगाने का प्रयास हुआ पर अंतर स्पष्ट है जो पहले भी था कि यथार्थवादी कृतियों में रंग और रूप में परिवर्तन संभव नहीं था, नपा-तुला संयोजन, सधा हुआ तूलिका संचालन यथार्थवाद की पहचान रही है जबकि यहाँ विषय तो आम होता था पर प्रस्तुति आम नहीं थी। कलाकारों को वस्तु से ज्यादा उसपर तैरता प्रकाश प्रभावित कर रहा था जो वस्तु के रूप से ज्यादा सौंदर्ययुक्त परिवेश को दर्शा रहा था। प्रभाववाद आरोप-प्रत्यारोप के भीषण दौर से गुजरते हुए तपे हुए सोने की भांति अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में सफल रहा। दुनिया में साधारण कुछ भी नहीं है सब के सब विशेष हैं बस समय और सही कद्रदान सही समय पर मिल जाए। पास को खास नहीं मान सकने वाले पद्धति से बाहर आकर प्रभाववादी कलाकार अपने आस-पास को ही खास नज़र से देखने लगे। टूटी-फूटी, पुरानी बिखरी पड़ी वस्तु भी प्रकाश के प्रभाव से कितनी प्रभावी बन सकती है, प्रभाववादियों ने इसका भरसक भान कराया है। प्रभाववाद में इस पक्ष पर काफी काम हुआ है। कह सकते हैं कि प्रकाश के विशेष प्रभाव के साथ यथार्थवादी कृतियाँ भी प्रभाववादी बन गईं। कहीं-कहीं यथार्थवाद के ही परिवर्तित रुप को प्रभाववाद माना गया है। बात अगर अंतर की हो तो नैसर्गिकता पर नैसर्गिक प्रकाश के प्रभाव के चलते कृतियों को प्रभावी बना देने के साथ ही उसके सौन्दर्य पक्ष को और अधिक प्रबल बना देना ही प्रभाववाद था। वही प्रभाववाद जिसमें कलाकार वैज्ञानिक तरीकों से कृतियों को परिवर्तित करने के प्रयास किए, वही प्रभाववाद जिसके बिना आधुनिक कला को समझ पाना मुश्किल है, जिसका प्रभाव ही रहा कि कलाकार खुल कर अपना आसमान तय करने लगे। वे सभी कलाकार जो आगे चलकर किसी न किसी वाद के जन्मदाता माने गए, खुद को प्रभाववाद से काफी हद तक प्रभावित मानते हैं। प्रभाववाद कई प्रयोगों हेतु जाना जाता है। माने, मोने, पिसारो, सिसली जैसे और कई महत्वपूर्ण कलाकारों के परिश्रम का ही फल प्रभाववाद है। 1863 का समय रहा जब लीक से हटकर काम करने वाले कलाकारों की कृतियाँ प्रर्दशनी हेतु अस्वीकृत कर दी गईं जबकि वे तमाम प्रयोगों और पूर्व के कई विशेष कलाकृतियों के अध्ययन के बल पर आधुनिक कला को मजबूती प्रदान करने हेतु मजबूत बुनियाद बनाने में जुटे हुए थे। कलाकृतियाँ प्रर्दशनी हेतु भेजी तो गईं पर चयन समिति में इस क्रांतिकारी परिवर्तन का कोई असर नहीं पड़ना था, समिति में परंपरागत विचारकों का बोलबाला था, उन्हें तो अपने पूर्व के बनें बनाए ढर्रे पर ही चलना था। परम्परागत मानकों को सम्हालना समिति के लोग खुद का उत्तरदायित्व समझते थे। ऐतिहासिक एवं धार्मिक वो भी बिल्कुल ही सावधानी पूर्वक बनाए गए कृतियों को चुनना उनका लक्ष्य था।

विरोधी विचारों के युद्ध में जीत सत्ताधारियों की हुई। उस वर्ष फ्रेंच राष्ट्रीय कला संस्थान द्वारा लगभग 4000 से भी अधिक चित्रों को अस्वीकृत कर दिया गया। एडवर्ड माने की कृति को दो वस्त्र युक्त पुरुषों के बीच बैठी एक निरावरण महिला के कारण अस्वीकृत होना पड़ा जबकि पूर्व में भी ऐसी कृतियाँ बनती रही थीं। अमान्य कृतियों को अमान्य कलाकारों ने आपस में ही खूब सराहा। कृतियों पर चर्चा का आयोजन भी किया गया जो प्रभाववाद के ही प्रभाव का प्रतिफल था।

अस्वीकृत कलाकारों में प्रर्दशनी को लेकर रोष साफ दिखने लगा था। जगह-जगह विरोध में प्रदर्शन होने लगे थे। सम्राट नेपोलियन तृतीय जिनकी रूचि भी परंपरागत ही थी, किन्तु विद्रोह जैसे घटनाओं में पारंगत मन में विचार आया कि क्यों न दर्शकों से ही निर्णय करवाया जाय। संवेदनशीलता प्रर्दशित करते हुए उन्होंने अस्वीकृत कृतियों की स्वतंत्र प्रर्दशनी लगाने का आदेश दिया। प्रर्दशनी 'अस्वीकृत चित्रकारों की प्रर्दशनी' नाम से प्रसिद्ध हुई। वर्ष 1863 आधुनिक चित्रकला के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हुआ उससे भी महत्वपूर्ण साबित हुआ नेपोलियन का निर्णय। कुछ चित्रकार अपनी कृतियाँ वापस ले गए जबकि अधिकतर चित्रकारों ने अपने कृतियों को प्रर्दशित करने का निर्णय लिया। कुछ कृतियों को छोड़ अधिकतर उपहास की पात्र बनीं किंतु नियमित दीर्घा की अपेक्षा भीड़ यहाँ ज्यादा रही। आगे चलकर आलोचक लुई के व्यंग्यात्मक लेख में क्लोद मोने के चित्र इंप्रेशन सनराइज हेतु प्रभाववाद शब्द का प्रयोग ही प्रभाववद नाम का कारण बना। चित्र साभार गूगल से।

जयंती पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक पत्रकार हैं।

करुणा, न्याय और नारी शक्ति का शिखर देवी अहिल्याबाई होल्कर

अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंडी गांव में एक मराठा कृषक परिवार में हुआ था। उनके पिता माणकोजी शिंदे एक सामान्य कृषक थे परंतु उन्होंने अपनी पुत्री को धार्मिक और नैतिक मूल्यों की गहन शिक्षा दी। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि मात्र 8 वर्ष की आयु में ही उन्हें मल्हारराव होल्कर की दृष्टि में प्रतिभाशाली माना गया और खांडेराव होल्कर से उनका विवाह संपन्न हुआ। इतिहासकार बताते हैं कि अहिल्याबाई को राजकीय शिक्षा या शाही प्रशिक्षण नहीं मिला था परंतु उनका स्वाभाविक विवेक, निर्णय क्षमता और संवेदनशीलता उन्हें एक कुशल शासक बनाने के लिए पर्याप्त थे। उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि उन्होंने नारी की सहज संवेदना और जननी की करुणा को प्रशासन की रीढ़ बनाया।

इतिहास के विशाल परिदृश्य में जब भी नारी शक्ति, सुशासन और सामाजिक समर्पण की बात होती है तो एक नाम विशेष श्रद्धा और गरिमा के साथ लिया जाता है 'लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर'। उन्होंने उस युग में शासन किया, जब स्त्रियों के लिए सत्ता, शिक्षा और स्वतंत्रता केवल एक सपना थी मगर अहिल्याबाई होल्कर ने अपने कर्त्तव्यों, न्यायप्रियता और लोककल्याण के मूल्यों से न केवल मालवा राज्य को स्वर्ण युग प्रदान किया बल्कि भारतीय प्रशासनिक इतिहास में एक अमिट छाप छोड़ी। 31 मई को लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर की जयंती है और यह अवसर न केवल उनके महान जीवन को स्मरण करने का है बल्कि उनके आदर्शों को वर्तमान शासन व्यवस्था और सामाजिक विकास के संदर्भ में पुनः आत्मसात करने का भी है।

अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंडी गांव में एक मराठा कृषक परिवार में हुआ था। उनके पिता माणकोजी शिंदे एक सामान्य कृषक थे परंतु उन्होंने अपनी पुत्री को धार्मिक और नैतिक मूल्यों की गहन शिक्षा दी। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि मात्र 8 वर्ष की आयु में ही उन्हें मल्हारराव होल्कर की दृष्टि में प्रतिभाशाली माना गया और खांडेराव होल्कर से उनका विवाह संपन्न हुआ। इतिहासकार बताते हैं कि अहिल्याबाई को राजकीय शिक्षा या शाही प्रशिक्षण नहीं मिला था परंतु उनका स्वाभाविक विवेक, निर्णय क्षमता और संवेदनशीलता उन्हें एक कुशल शासक बनाने के लिए पर्याप्त थे। उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि उन्होंने नारी की सहज संवेदना और जननी की करुणा को प्रशासन की रीढ़ बनाया। विवाह के कुछ वर्षों बाद 1754 में उनके पति खांडेराव होल्कर कुंभेरी के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। उसके पश्चात 1766 में ससुर मल्हारराव होल्कर की भी मृत्यु हो गई। यह दोहरे आघात किसी भी महिला को तोड़ सकते थे परंतु अहिल्याबाई ने इन दुःखों को अपने कर्त्तव्यबोध और लोककल्याण की भावना में बदल दिया। राज्य की सत्ता संभालते समय उन्होंने हर मोर्चे पर कठिनाईयों का सामना किया। उन्हें न केवल बाहरी आक्रमणों से राज्य की रक्षा करनी थी बल्कि आंतरिक प्रशासनिक संरचना को भी सुदृढ़ बनाना था। यह बात बहुत कम लोगों को ज्ञात है कि अहिल्याबाई के शासनकाल में मालवा राज्य में किसी भी प्रकार की विद्रोह या असंतोष की कोई बड़ी घटना नहीं हुई। उनका शासन इतना न्यायपूर्ण था कि प्रजा स्वयं उनकी सहायता किया करती थी। 1767 से 1795 तक लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर के शासनकाल को मालवा का 'स्वर्ण युग' माना जाता है। उन्होंने कर प्रणाली में व्यापक सुधार किए। किसानों को ऋण मुक्ति दिलाने और सिंचाई सुविधाओं को विकसित करने के लिए विशेष योजनाएं बनाई। 'ग्राम स्तर पर स्वराज' की जो अवधारणा महात्मा गांधी ने 20वीं सदी में दी, वह कई मायनों में अहिल्याबाई के शासन में पहले ही दिखाई देती थी। उन्होंने प्रशासन में पारदर्शिता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। उनके दरबार में महिलाएं, गरीब किसान, व्यापारी, सभी को न्याय की समान पहुंच थी। इतिहासकार गोविंद सखाराम सरदेसाई लिखते हैं कि अहिल्याबाई स्वयं हर सुबह जनता दरबार लगाती और अपने हाथ से न्याय करती थी। उन्होंने राज्य को इस तरह व्यवस्थित किया कि हर गांव में राजस्व अधिकारी, ग्राम सेवक और पंचायतें सक्रिय रूप से कार्य करती थी। अहिल्याबाई होल्कर का एक बड़ा योगदान भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान में भी रहा। उन्होंने लगभग 1200 से अधिक मंदिरों, घाटों, कुंडों, धर्मशालाओं, सरायों और जलाशयों का निर्माण कराया। केवल मालवा ही नहीं, उत्तर भारत, दक्षिण भारत, पूर्व और पश्चिम भारत के धार्मिक केंद्रों में भी उनके निर्माण कार्य आज भी देखे जा सकते हैं। काशी विश्वनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार और अहिल्याबाई घाट का निर्माण, द्वारका में द्वारकाधीश मंदिर का विस्तार, रामेश्वरम और सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण कार्य, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री जैसे दुर्गम तीर्थों पर यात्री सुविधाएं, नासिक, उज्जैन, पंढ़रपुर, चित्रकूट, हरिद्वार जैसे तीर्थ क्षेत्रों में धर्मशालाएं और अन्नछत्र इत्यादि, इन सभी कार्यों में उनका उद्देश्य केवल धार्मिक नहीं था बल्कि वह तीर्थाटन को एक सामाजिक कल्याण योजना के रूप में देखती थी, जहां श्रम, सेवा, भोजन और विश्राम को संयोजित किया गया। 18वीं सदी में पर्दा प्रथा, स्त्री शिक्षा का अभाव, बाल विवाह और विधवा को सामाजिक तिरस्कार झेलना पड़ता था परंतु अहिल्याबाई ने अपने कार्यों से इन मान्यताओं को चुनौती दी। उन्होंने विधवा विवाह को सामाजिक समर्थन दिया, बालिकाओं की शिक्षा के लिए पाठशालाएं खुलवाई और महिलाओं के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता की योजनाएं बनाई। इतिहास में दर्ज है कि उन्होंने कई बार महिला वादियों के मामलों को स्वयं सुनकर न्याय दिया। उनके दरबार में महिलाएं बेझिझक अपनी बात कह सकती थी, जो उस समय असाधारण बात थी। अहिल्याबाई ने अपने राज्य में एक अत्यंत व्यवस्थित पत्राचार प्रणाली विकसित की थी, जिसे 'होल्कर दफ्तर' के नाम से जाना जाता था। यहां से संपूर्ण राज्य के प्रशासन को नियंत्रित किया जाता था। उन्होंने अपने राज्य में स्थानीय डाक सेवा शुरू की थी, जिससे सूचना का संचार तीव्र हो सका। उनके शासन में अफगान लुटेरे मालवा में प्रवेश नहीं कर सके क्योंकि उन्होंने सीमाओं पर सैनिक चौकियों का कुशल प्रबंधन किया। जहां-जहां उन्होंने निर्माण कराए, वहां पत्थर पर उनका नाम अंकित होता था। आज भी कई स्थलों पर 'श्रीमती अहिल्याबाई होल्कर द्वारा निर्माणित' शिलालेख पाए जाते हैं।

महारानी अहिल्याबाई होल्कर को 'लोकमाता' की उपाधि किसी शाही आदेश से नहीं मिली थी बल्कि उन्हें यह उपाधि स्वयं जनता ने दी थी। उनके न्याय, सेवा और ममता से जनता उन्हें 'जननी' मानने लगी थी। 1795 में 70 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ परंतु उनकी स्मृति आज भी जन-जन में जीवित है। इंदौर स्थित राजवाड़ा परिसर में स्थित अहिल्याबाई का समाधि स्थल तो एक अत्यंत श्रद्धा का केंद्र है, जहां प्रतिवर्ष हजारों लोग उन्हें श्रद्धांजलि देने पहुंचते हैं। भारत सरकार द्वारा 1996 में उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया गया था। इसके अतिरिक्त, इंदौर विश्वविद्यालय का नाम 'देवी अहिल्या विश्वविद्यालय' रखा गया है। महेश्वर नगर में स्थित 'राजगद्दी स्मारक' और 'होल्कर किला' उनके जीवन और शासन की झलक देते हैं। आज जब भारत महिला सशक्तिकरण, पारदर्शी शासन और सतत विकास की दिशा में अग्रसर है तो लोकमाता अहिल्याबाई का आदर्श प्रेरणास्त्रोत है।

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

किताब का चर्चित पात्र वेब सीरीज में जीवंत हुआ

पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अपराध कथाओं और जासूसी और रहस्य-रोमांच के कथानक पर फोकस कर उपन्यासों की श्रृँखला के स्वरुप में थोक में लोकप्रिय साहित्य रचा जा रहा था , जिससे चिढ़कर साहित्य के लम्बरदारनुमा वर्ग उसे ' लुगदी साहित्य'की संज्ञा भी देता था । इस लोकप्रिय साहित्य का बड़ा प्रचलन था और सुरेन्द्र मोहन पाठक, ओमप्रकाश शर्मा,वेदप्रकाश काम्बोज और रंजीत इसके नामी लेखक थे । इन्हीं में से एक मशहूर लेखक सुरेन्द्र मोहन पाठक की -'द विमल सीरीज ' पर आधारित एक थ्रिलर सिरीज़ गत दिनों एमेजॉन एम एक्स प्लेयर पर रिलीज़ हुई है ।हिन्दी साहित्य के इस लोकप्रिय संवर्ग के एक चर्चित चरित्र -' विमल खन्ना' को इस बार सम्भवतः पहली बार पर्दे पर जीवन्त किया गया है।

विमल खन्ना की कहानी सिरीज़ के केन्द्रीय चरित्र -' विमल खन्ना ' के आसपास बुनी गई है जो गलत आरोपों में फँसा दिया गया है। अपनी पहचान खो चुके विमल खन्ना को बेगुनाही साबित करने की लड़ाई जल्द ही उस सिस्टम के खिलाफ जंग में बदल जाती है, जो उसे पूरी तरह बर्बाद करने पर तुला है। जैसे-जैसे हालात उसके हाथ से निकलते जाते हैं, हर कदम पहले से तय सा लगता है और हर बार बच निकलने की कीमत उसे और भारी पड़ती है, जिससे वह एक उलझे हुए जाल में और गहराई तक फंसता चला जाता है। अपनी असल कहानी कहने और भावनात्मक गहराई के साथ रह सिरीज एक सख्त और वास्तविक शहरी दुनिया को दिखाती है, जहाँ डर, बदलती वफादारियां और जिंदा रहने की जद्दोजहद हर पल महसूस होती है

सिरीज में विमल खन्ना लगातार भागता हुआ नजर आता है। वह धोखे, विश्वासघात और जिंदगी बचाने की जंग के खतरनाक जाल में फँसता चला जाता है, जहाँ हर बार बच निकलने की कोशिश उसे और गहराई में धकेल देती है। जैसे-जैसे राज खुलते हैं और छिपे हुए इरादे सामने आते हैं, एक सवाल बार-बार उठने लगता है विमल खन्ना बचेगा या मरेगा? क्या वह इस जाल से बाहर निकल पाएगा, या फिर यह खतरनाक भंवर उसे और गहराई में खींच ले जाएगा ? विमल की जीजिविषा उसे बचालेती है और सिरीज़ का यह सुखान्त दर्शकों को अच्छा लगेगा ।

सीरीज में विमल की केन्द्रीय भूमिका में सनी हिंदुजा हैं जबकि उनके साथ ईशा तलवार और तारा अलीशा बेरी भी दिखाई देंगी। यह सिरीज दर्शकों को एक ऐसे तनाव भरे और अप्रत्याशित संसार में ले जाएगी, जहाँ पहचान हर पल बदल सकती है । भरोसा करना खतरनाक है, और हर कदम की एक भारी कीमत चुकानी पड़ती है। इस भूमिका की तैयारी के बारे में सनी ने बताया कि उन्होंने इसके लिए मूल उपन्यास का अध्ययन किया। उन्होंने कहा, विमल का किरदार निभाने के लिए उपन्यास पढ़ना अनिवार्य था। एक व्यक्ति का अतीत उसके भविष्य की नींव रखता है। विमल खन्ना का अतीत काफी जटिल और अंधेरा है। वह इससे भागने की कोशिश करता है, लेकिन यह हमेशा उसके साथ रहता है। उपन्यास ने मुझे विमल के बचपन, उसके भावनात्मक घावों और उसके व्यक्तित्व की जटिलताओं को समझने में मदद की।

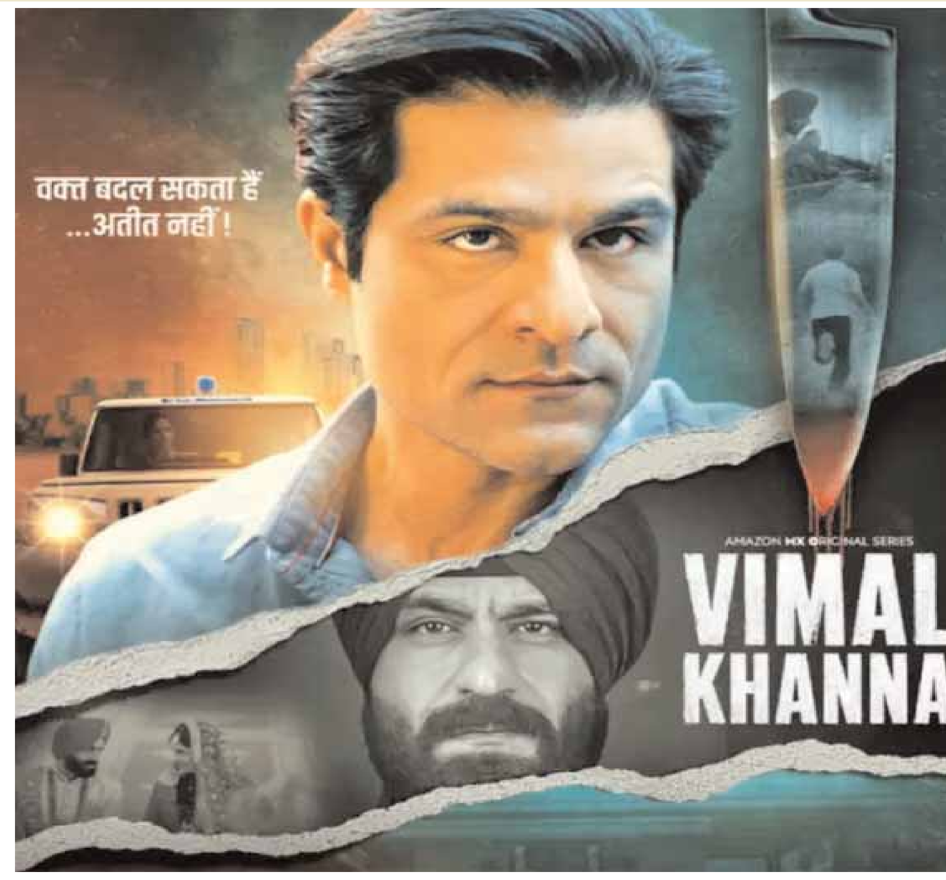

तकनीकी रूप से 'विमल खन्ना' काफी मजबूत सिरीज़ है। मुंबई की सड़कों से लेकर आलीशान बंगलों तक हर लोकेशन को सिनेमेटोग्राफी के जरिए बेहद खूबसूरती से फिल्माया गया है। साउंड डिजाइन और बैकग्राउंड म्यूजिक कहानी के तनाव और रहस्य को और ज्यादा असरदार बनाते हैं। प्रोडक्शन डिजाइन में बारीकियों पर खास ध्यान दिया गया है, जिसकी वजह से पूरा माहौल बेहद वास्तविक महसूस होता है।

निर्देशक अभिनव ने कहानी को गंभीर और थ्रिलिंग टोन में पेश करने का अच्छा काम किया है। उन्होंने कलाकारों से बेहतरीन अभिनय करवाया है और सिरीज़ के सस्पेंस को लगातार बनाए रखा। हालांकि, कुछ जगहों पर कहानी की रफ्तार थोड़ी धीमी महसूस होती है और कई सहायक किरदारों को पर्याप्त डेप्थ नहीं मिल पाती। अगर इन पहलुओं पर थोड़ा और काम किया जाता, तो यह सिरीज़ एक यादगार क्राइम थ्रिलर बन सकती थी। इसके बावजूद, 'विमल खन्ना' एक ऐसी सस्पेंस थ्रिलर है जो अपने दमदार अभिनय, शानदार विजुअल्स और रहस्यमयी कहानी की वजह से देखने लायक बन जाती है। अगर आप सस्पेंस और क्राइम ड्रामा पसंद करते हैं, तो यह सिरीज़ आपको निराश नहीं करेगी।

मिहिर सेन तरणताल में 54वीं राज्य स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता का हुआ शुभारंभ

खेल समरसता व भाईचारे का संदेश देते हैं: राजेन्द्र शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि खेल समरसता व भाईचारे का संदेश देते हैं। सकारात्मक मानसिकता के साथ किया गया कार्य हमेशा सफल होता है। खेल को खिलाड़ी भावना से खेलना चाहिए। उप मुख्यमंत्री ने रीवा के मिहिरसेन तरणताल में 54वीं राज्य स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। उन्होंने घोषणा की कि तरणताल के डायविंग पूल का नाम कैप्टन बजरंगी प्रसाद के नाम पर होगा।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि रीवा को राज्य स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता कराने का अवसर मिला है। यहाँ से जीत कर खिलाड़ी मध्यप्रदेश की टीम में शामिल होंगे। उन्होंने खिलाड़ियों से कहा कि उदीयमान खिलाड़ी का लक्ष्य लेकर चलें। जीतने से ज्यादा महत्वपूर्ण है खिलाड़ी भावना के साथ खेल में भाग लेना। हार से निराश न हों और कमी को दूर करते हुए सफलता के लिए सतत प्रयत्नशील रहें। उन्होंने कहा कि रीवा वह धरा है जहाँ से निकले कैप्टन बजरंगी प्रसाद को खेल का सर्वोच्च पुरस्कार अर्जुन पुरस्कार तैराकी में ही प्राप्त हुआ। इस तरणताल का निर्माण भी कैप्टन बजरंगी प्रसाद की निगरानी में हुआ और उन्होंने अपने बड़प्पन का परिचय देते हुए इसका नामकरण मिहिर सेन के नाम से किया था। श्री शुक्ल ने कहा कि डायविंग पूल का नाम कैप्टन बजरंगी प्रसाद के नाम से होगा और उनकी उपलब्धियों का शिलालेख भी लगाया जाएगा ताकि नई पीढ़ी उनके योगदान को याद रख सके। श्री शुक्ल ने तरणताल में नए स्प्रिंगबोर्ड लगाए जाने के भी निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि इस तरणताल में उन्होंने स्वयं भी काफी तैराकी की है। विकास के साथ-साथ इस प्रकार के आयोजन क्षेत्र की छवि को बेहतर करते हैं। उप मुख्यमंत्री ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं।

उप मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन कार्यों का किया निरीक्षण

उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने रीवा शहर में विभिन्न निमार्णाधीन कार्यों का निरीक्षण किया। उप मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन मातृ-शिशु अस्पताल तथा पीजी हॉस्टल, पीईटी स्कैन सेंटर एवं कैंसर अस्पताल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने निर्माण कार्यों की प्रगति एवं गुणवत्ता का अवलोकन कर संबंधित अधिकारियों एवं कार्यदायी संस्थाओं को निर्धारित समय-सीमा में उच्च गुणवत्ता के साथ कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए, ताकि क्षेत्रवासियों को बेहतर एवं आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सके। इसके बाद उप मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन नैकहाई शौर्य स्मारक का निरीक्षण कर कार्यों की समीक्षा की तथा स्मारक के निर्माण को निधारित मानकों एवं समय-सीमा के अनुरूप पूर्ण करने हेतु आवश्यक निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन कुदुलिया-रौसर सड़क का भी निरीक्षण किया और कार्य की प्रगति देखी। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि इस सड़क के बन जाने से आमजन को बेहतर एवं सुगम आवागमन की सुविधा उपलब्ध होगी।

'मानवता की सेवा का सबसे बड़ा कार्य गौ सेवा और प्राकृतिक खेती है'

प्राकृतिक खेती से ही माटी को प्राण और उर्वरा शक्ति मिलेगी

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने प्राकृतिक खेती की जागरूकता के लिए कृष्णा राज कपूर आडिटोरियम रीवा में आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने फसलों के अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए फर्टिलाइजर का बहुत अधिक उपयोग किया है, जिसके कारण मिट्टी कठोर और अनुपजाऊ होती जा रही है। इससे मिलने वाली फसल घातक रसायनों से भरी होती है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं है। पर्याप्त अनाज, फल और सब्जी के बावजूद हममें बढ़ती नई बीमारियाँ फसलों में कीटनाशकों और रासायनिक खाद के उपयोग के कारण ही हैं। यदि हमें धरती माता और मिट्टी को बचाना है तो प्राकृतिक खेती ही इसका एकमात्र उपाय है। प्राकृतिक खेती के लिए हमें गौपालन को अपनाना होगा। मानवता की सेवा का सबसे बड़ा कार्य गौ सेवा और प्राकृतिक खेती है।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक खेती में शुरू के कुछ वर्षों में उत्पादन कम मिलता है, लेकिन बाद में फसल की गणुवत्ता और उत्पादन दोनों में वृद्धि होती है। हर किसान अपनी जमीन के छोटे से भाग में प्राकृतिक खेती शुरू करे जिससे उनके परिवार के लिए अनाज और सब्जियाँ मिल सकें। इसके अच्छे परिणाम मिलने के बाद आप स्वयं ही पूरी जमीन पर प्राकृतिक खेती को अपना लेंगे। रीवा में मेडिकल के क्षेत्र में तेजी से सुविधाएं बढ़ी हैं। कैंसर हास्पिटल में सौ करोड़ की आधुनिकतम मशीनें लगाई जा रही हैं। सुपर स्पशेलिटी हास्पिटल में जटिल आपरेशन हो रहे हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं में ध्यान देने के साथ-साथ हमें रोगों के मूल कारण पर भी ध्यान देना होगा। जल जीवन मिशन से हर घर में नल से साफ पानी तथा प्राकृतिक खेती की सुविधा हो जाए तो रोग आधे हो जाएंगे। बसामन मामा गौ अभ्यारण्य और हिनौती गौधाम में प्राकृतिक खेती के माडल विकसित किए जा रहे हैं। मैंने भी अपनी पाँच एकड़ जमीन पर प्राकृतिक खेती शुरू की है। किसानों को प्राकृतिक खेती के प्रशिक्षण की भी सुविधा है। इस प्रशिक्षण को विकासखण्ड स्तर पर भी दिया जाएगा, जिससे हर गांव का किसान प्राकृतिक खेती से जुड़ सके। हमें भावी पीढ़ी का जीवन बचाने और अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना आवश्यक है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन व्यावसायिक संस्थान द्वारा किया गया। उप मुख्यमंत्री ने संस्थान द्वारा संचालित स्वयंसेवी संस्था समृद्धि सरोज फाउंडेशन का शुभारंभ किया। उप मुख्यमंत्री ने समारोह में कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. एसके त्रिपाठी, कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों तथा कृषि विभाग के अधिकारियों को सम्मानित किया। समारोह में समाजसेवी श्री राम सिंह ने प्राकृतिक खेती के महत्व और रीवा जिले में खेती के विकास की जानकारी दी। समारोह में अतिथियों का स्वागत संस्थान के संचालक शैलेन्द्र सिंह पटेल ने किया। समारोह में डॉ. केएस बघेल, डॉ. अजय पाण्डेय डॉ. बृजेश तिवारी, डॉ. संजय सिंह, श्री अखिलेश पटेल तथा अन्य कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को प्राकृतिक खेती एवं जैविक खेती की जानकारी दी। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में किसान शामिल हुए।

ट्रॉली पलटने से अब तक 6 श्रद्धालुओं की मौत

49 लोग सवार थे, 26 मेडिकल कॉलेज में एडमिट

उमरिया (नप्र)। उमरिया और अनूपपुर जिले की सीमा पर स्थित मिलनी गांव के पास शुक्रवार को एक ट्रैक्टर-ट्रॉली पलट गई थी। इस हादसे में मृतकों की संख्या बढ़कर 6 हो गई है। ट्रॉली में कुल 49 श्रद्धालु सवार थे, जो ग्राम पड़मनिया से पूजा-अर्चना के लिए ग्राम बिजौरा जा रहे थे। इसी दौरान ट्रैक्टर-ट्रॉली अनियंत्रित होकर पलट गई।

हादसे में दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि दो अन्य ने पाली अस्पताल ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया। गंभीर रूप से घायल 28 लोगों को शहडोल मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया था, जहां उपचार के दौरान दो और लोगों ने दम तोड़ दिया।शनिवार को शहडोल मेडिकल कॉलेज में 26 घायलों का इलाज जारी है। वहीं, पाली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में 5 घायलों का उपचार चल रहा है। हादसे में घायल हुए 13 लोगों को हालत में सुधार के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है।

मुख्यमंत्री ने अनूपपुर जिले में हुई सड़क दुर्घटना पर किया शोक व्यक्त,4-4 लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने के दिए निर्देश

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अनूपपुर जिले में पुष्पराजगढ़ के ग्राम बिजौरा में श्रद्धालुओं को लेकर मंदिर जा रही ट्रैक्टर-ट्रॉली के पलटने से हुई सड़क दुर्घटना पर दुख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दुर्घटना में 6 लोगों के असामयिक निधन और कुछ लोगों के घायल होने का समाचार अत्यंत दुखद है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शोकाकुल परिजन के प्रति संवेदनाएं व्यक्त की हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राज्य शासन की ओर से मृतकों के परिजन को 4-4 लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने के निर्देश दिए हैं। दुर्घटना में घायलों का उपचार जारी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दिवंगतों की आत्मा को शांति और घायलों को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने की बाबा महाकाल से प्रार्थना की है।

नीट पेपर लीक, सीएम हाउस घेरने निकली एसएसयूआई

भोपाल पुलिस ने चलाए वॉटर कैनन, पटवारी-सिंघार को घेरा बनाकर बचाया

भोपाल (नप्र)। भोपाल में शुक्रवार को नीट परीक्षा में कथित पेपर लीक और गड़बड़ियों के विरोध में कांग्रेस छात्र संगठन एनएसयूआई ने बड़ा प्रदर्शन किया। एनएसयूआई के सैकड़ों कार्यकर्ता मुख्यमंत्री निवास घेराव के लिए निकले, लेकिन पुलिस ने रेडक्रॉस चौराहे पर बैरिकेडिंग लगाकर उन्हें रोक लिया। प्रदर्शन के दौरान स्थिति तनावपूर्ण हो गई।

पुलिस को प्रदर्शनकारियों को नियंत्रित करने के लिए पांच बार वॉटर कैनन चलाया। हस्द्ध कार्यकर्ताओं ने पुलिसकर्मियों की तरफ जूता फेंक दिया। इससे पुलिस अधिकारी नाराज हो गए। माइक से कार्यकर्ताओं को अभद्रता नहीं करने की चेतावनी दी। ये किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। वहीं बवाल के बीच पुलिस हरकत में आ गई। बड़ी संख्या में एनएसयूआई और कांग्रेस कार्यकर्ताओं को हिरासत में ले लिया। इमें पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह, प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी समेत कांग्रेस के 200 कार्यकर्ताओं पुलिस हिरासत में हैं। नेताओं को बस में भरकर पुलिस ले गई है।

कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला कौशल समिति की उच्च स्तरीय बैठक

क्षेत्र के युवाओं के कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने वाली योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की गई ?

धार। कलेक्टर राजीव रंजन मीना की अध्यक्षता में शुक्रवार को औद्योगिक क्षेत्र पीथमपुर के निर्यात भवन में जिला कौशल समिति की एक महत्वपूर्ण एवं उच्च स्तरीय बैठक आयोजित की गई। बैठक में क्षेत्र के युवाओं के कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने वाली विभिन्न महत्वाकांक्षी सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की विस्तृत समीक्षा की गई। युवाओं को उद्योगों से जोड़ने और योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर बल दिया गया। बैठक के दौरान युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें स्थानीय उद्योगों की मांग के अनुरूप तैयार करने के लिए संचालित योजनाओं पर गहन चर्चा हुई।

बैठक में आईटीआई प्रवेश प्रक्रिया का सरलीकरण के संबंध में आगामी शैक्षणिक सत्र के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रवेश प्रक्रिया को अधिक सुगम और व्यापक बनाने के निर्देश दिए गए, ताकि ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों के अधिकतम छात्र तकनीकी शिक्षा से जुड़ सकें। प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना के तहत स्थानीय उद्योगों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित कर युवाओं को व्यावहारिक औद्योगिक अनुभव दिलाने की रणनीति पर बल दिया गया।

बैठक में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय अप्रेंटिसशिप योजना अंतर्गत आईटीआई उत्तीर्ण प्रशिक्षणार्थियों को क्षेत्र के प्रतिष्ठित औद्योगिक प्रतिष्ठानों में अधिक से अधिक अप्रेंटिसशिप के अवसर उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए।

इसी के साथ ही मुख्यमंत्री सीखो-कमाओ योजना के तहत युवाओं के पंजीयन, उद्योगों में रिक्तियों के विरुद्ध उनकी जॉइनिंग और उन्हें मिलने वाले स्टाइपेंड की वर्तमान प्रगति की बिंदुवार समीक्षा की गई।

बैठक में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था धार द्वारा कौशल विकास और प्लेसमेंट के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की विशेष रूप से सराहना की गई। कलेक्टर ने संस्था की रीढ़ माने जाने वाले ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल और जूनियर अप्रेंटिस एडवाइजर की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि संस्था न केवल युवाओं को गुणवत्तापूर्ण तकनीकी प्रशिक्षण दे रही है, बल्कि इन्डस्ट्री कनेक्ट के माध्यम से उन्हें सीधे रोजगार और अप्रेंटिसशिप के अवसरों से जोड़कर सराहनीय कार्य कर रही है। कलेक्टर ने विभागीय अधिकारियों, उद्योग प्रतिनिधियों और आईटीआई समन्वयकों को आपसी समन्वय के साथ काम करने के कड़े निर्देश दिए।

धार जिले में नई फार्मा इकाई मैडइम्पैक्ट लाइफसाइंसेज का भव्य उद्घाटन मंत्री चैतन्य काश्यप के हाथों आज

औद्योगिक क्षेत्र उज्जैनी में आकार ले रही अत्याधुनिक एपीआई और स्टेरॉयड विनिर्माण इकाई

धार। धार जिले के औद्योगिक परिदृश्य में एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा है। फार्मास्युटिकल क्षेत्र की प्रतिष्ठित मैडइम्पैक्ट लाइफसाइंसेज कंपनी द्वारा जिले के ग्राम-उज्जैनी स्थित एमपीआईडीसी इंडस्ट्रियल एरिया (प्लॉट नंबर 125-126) में एक अत्याधुनिक नई विनिर्माण इकाई स्थापित की गई है। इस भव्य औद्योगिक संयंत्र का उद्घाटन रविवार, 31 मई को शाम 4ञ्30 बजे से आयोजित किया जाएगा।

इस भव्य उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश शासन के केबिनेट मंत्री चैतन्य काश्यप होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा करेंगे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में धार क्षेत्र की लोकप्रिय विधायक नीना वर्मा एवं अशोक जैन विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे।

क्षेत्र में बढ़ेंगे रोजगार और निवेश के अवसर कंपनी के निदेशक द्वय संजय रमनलाल जैन एवं आशीष कैलाश चंद जैन ने बताया कि यह नई इकाई मुख्य रूप से एपीआई (एक्टिव फार्मास्युटिकल इंग्रीडिएंट्स) और स्टेरॉयड के उच्च गुणवत्तायुक्त निर्माण पर केंद्रित होगी। विज्ञान और अनुसंधान पर आधारित इस अत्याधुनिक प्लांट के शुरू होने से न केवल स्वास्थ्य क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार और औद्योगिक निवेश के नए अवसर भी सृजित होंगे।

कलेक्ट्रेट की नजूल शाखा में पदस्थ हेमराज झाडे हुए सेवानिवृत

34 साल के सेवा के बाद हुए रिटायर, 1 साल में नवीनीकरण के 1790 प्रकरण निपटाए

बैतूल। कलेक्ट्रेट की नजूल शाखा में सहायक ग्रेड 3 हेमराज झाडे 30 मई को अपनी 34 साल 7 महीने की सेवा पूरी कर रिटायर हो गए। उन्होंने इस सेवा काल के दौरान शाहपुर, भैसदेही और बैतूल में अपनी सेवाएं दी। वे अधिकांश समय कलेक्ट्रेट में ही पदस्थ रहे। उनकी कार्यशैली के कारण वे सभी के प्रिय रहे। उन्होंने कलेक्टोरेट में पदस्थ रहते सभी तरह की जिम्मेदारी पूरी निष्ठाश्चश्च के साथ निभाई।सेवा काल के आखिरी दौर में वे कलेक्टरेट की नजूल शाखा में पदस्थ रहे। इस दौरान उन्होंने पट्टा वितरण और नवीनीकरण के प्रकरणों में अच्छा कार्य किया और अधिकारी वर्ग से सराहना भी पाई। वर्ष 2025 और 26 में

उन्होंने 1 हजार 790 प्रकरण नवीनीकरण के निपटाएं। इनसे 3 करोड़ 19 लख रुपए के राजस्व की वसूली की गई। इससे सरकारी खाते में राजस्व की सबसे ज्यादा आय हुई। यह एक बडी उपब्धि थी। कलेक्ट्रेट में सेवानिवृत्ति के विदाई कार्यक्रम के अवसर पर झाड़े ने कहा कि उन्होंने किसी भी काम को कभी बोझ नहीं समझा। हर काम को हंसी खुशी के साथ पूरा किया। लोगों को आपसे उम्मीद होती है, वे अपने काम के लिए आते हैं, उनकी बात कोई सुन लेता है, तो बिना काम के खुश हो जाते हैं। काम भले ही बाद में हो तो भी चल जाता है। उन्होंने अपने साथी कर्मचारियों को संदेश देते हुए कहा कि वे हर काम को आपसी सामंजस से पूरा करें। काम को कभी बोझ ना समझे, बल्कि उसे हंसी खुशी के साथ पूरा करें। इससे कोई परेशानी नहीं होगी।

जिला आयुष अधिकारी ने जनता से की योग से जुडऩे की अपील

बैतूल। मप्र आयुष विभाग द्वारा संचालित घर-घर योग -हर व्यक्ति निरोग अभियान के तहत जिले में आमजन को योग से जोडऩे के लिए नियमित ऑनलाइन योग प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर ने बताया कि प्रतिदिन सुबह 8 बजे यूट्यूब के माध्यम से योग प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिससे लोग घर बैठे योगाभ्यास और विभिन्न योग क्रियाओं का प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि योग को जन-जन तक पहुंचाने और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह अभियान चलाया जा रहा है। जिले के नागरिक अपने निकटस्थ आयुर्वेद चिकित्सालय टिकारी, बैतूल तथा क्षेत्र के आयुष्मान आरोग्य मंदिरों (आयुष) में पहुंचकर भी इस सुविधा का लाभ ले सकते हैं। डॉ. चौकीकर ने जिले की जनता से अधिक से अधिक संख्या में इस अभियान से जुडऩे की अपील करते हुए कहा कि लोग घर से ही यूट्यूब के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त कर नियमित योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं और निरोग जीवन की ओर कदम बढ़ाएं।

नगर पंचायत परिषद ने संपत्तिकर में एक हजार गुना तक वृद्धि की, वरिष्ठ कांग्रेस पार्षद बेलवंशी ने कहा यह खुली लूट

सोहागपुर। नगर पंचायत परिषद की कार्यशैली पर निर्वाचन समय से ही विभिन्न आरोप लगते रहे हैं। वर्तमान में वरिष्ठ कांग्रेस पार्षद धर्मदास बैलबंशी हमेशा विपक्ष की भूमिका का निभाते आ रहे हैं। हाल ही में नगर पंचायत परिषद सोहागपुर ने जिस मान से संपत्तिकर की दर बढ़ाई है इसे श्री बेलबशी ने खुली लूट की संज्ञा देकर नगर के समस्त सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के अलावा नगर के सभी पत्रकारों को भी आगह करते सहयोग की अपेक्षा की है। ताकि नगर के जनमानस पर भारी-भरकम बोझ न पड़े। इधर बड़े अफसोस की बात तो यह है कि नगर पंचायत परिषद के पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष इस मामले में मौन साधकर बैठे हैं।वहीं कांग्रेस पदाधिकारी भी चुपचाप इस मामले को नजर अंदाज कर रहे हैं। इस बात की चर्चा गरम है कि जनता-जनार्दन के हितैषी पार्षदों को जनता ने नकार दिया था। अब जनता-जनार्दन लुटने वाली है।तो हम क्यों बोलें। जनता-जनार्दन को अपने हितों के जन आंदोलन करना चाहिए। श्री बेलबंशी ने सोशल मीडिया पर लिखी पाती में कहा है कि यह नगर वासियों से खुली लूट,डकैती भी कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।नगर परिषद ने 7 गुना(700त्न) से 10 गुना(1000त्न) तक की टैक्स वृद्धि कर दी है। इस बेइंतहा टैक्स वृद्धि से नगर परिषद द्वारा सोहागपुर का प्रत्येक नागरिक को ठगा जा रहा है। शायद सत्तासीन जन प्रतिनिधियों की भी मंशा स्पष्ट नजर आ रही है। नगर में रोजगार की भरी कमी है। इसके अलावा न ही नगर में कोई उद्योग धंधे हैं। प्रति दिन सैकड़ों युवा रोजगार के लिए इटारसी और पिपरिया पलायन करते है जिसकी बानगी सुबह इटारसी जाने वाली अमरकंटक एक्सप्रेस और पिपरिया जाने वाली राजकोट एक्सप्रेस पर देखी जा सकती है। नगर का आम नागरिक आखिर इतना टैक्स कैसे दे पाएगा?

कालोनाइजर्स और बड़े टैक्स बकाया दार पर नगर परिषद मेहरबान। नगर में निर्माणधीन 80त्नकालोनी अवैध है। और इन कालोनियों पर करोड़ों रुपया टैक्स बकाया है लेकिन नगर परिषद इनसे टैक्स नहीं वसूल पा रही है जबकि इन कालोनियों में रोड नाली बनाकर उन्हें पुरुस्कृत जरूर कर रही है। साथ नगर में कई बड़े टैक्स बकायादार है जिनसे भी टैक्स वसूली में नगर परिषद विफल है।

स्पष्ट है कि इस कर वृद्धि की चपेट में आम नागरिक ही आएंगे इन्ही नागरिकों से जोर जबदस्ती वसूली की जाएगी। मेरा नगर परिषद से अनुरोध है कि बड़ी हुई टैक्स दर वापिस ले जाकर पुराने मान से अथवा 05/10त्न की वृद्धि से टैक्स वसूला जाना चाहिए। इस बड़े हुए टैक्स के विरोध में यदि आम नागरिक आंदोलन करने के लिए भी बाध्य हो सकता है।अमरकंटक रोको जैसे आंदोलन इस नगर का इतिहास रहा है। उल्लेखनीय है कि अमरकंटक एक्सप्रेस आन्दोलन में नगर के वाशिंदे एक मत थे। जिसमें पुलिस को गोली चलानी पड़ी थी। अमरकंटक एक्सप्रेस उसी दिन से सोहागपुर में रुकना प्रारंभ हो गया था। वरिष्ठ पार्षद धर्मदास बैलवशी की यही मंशा नजर आती है।कि अत्यधिक सम्पतिकर का पुरजोर विरोध जनता-जनार्दन को करना चाहिए।

मोदी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाएं जन जन तक पहुंचे : हेमंत खंडेलवाल

प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल के 12 वर्ष पूर्ण होने पर भाजपा की जिला कार्यशाला संपन्न

बैतूल। भाजपा जिला बैतूल द्वारा शुक्रवार को जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 12 वर्ष ÷विश्वास, विकास एवं जनकल्याण÷ के पूर्ण होने पर आगामी 5 से 21 जून तक चलने वाले महाभियान की कार्यशाला को संबोधित करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि 12 साल प्रधानमंत्री के रूप में मोदी का एक दशक से ज्यादा का सफर ÷अनवरत विकास÷ का पर्याय बन गया है। केन्द्र की कल्याणकारी योजनाओं का हम तूलनात्मक अध्ययन करे तो आजादी के बाद पहली बार लोगो को प्रधानमंत्री आवास, स्वच्छ पेयजल, बिजली और सडक के साथ साथ किसानो व महिलाओं के लिए बेहतरीन योजनाएं आई है। जिससे किसान और महिलाएं सशक्त हुई है। आयुष्मान भारत योजना से लोगो को स्वास्थ्य लाभ सुगमता के साथ मिल रहा है। हमें इस पखवाडे के दौरान जन जन तक इन कल्याणकारी योजनाओं को पहुंचाना है। श्री खंडेलवाल ने कहा कि पात्र हितग्राही को शासन की योजनाओं का लाभ मिले इसीलिए पंजीयन से लेकर लाभार्थी होने तक कार्यकर्ताओं को अपने क्षेत्र में लगातार प्रवास और संवाद करने चाहिए। कार्यशाला को संबोधित करते भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने कहा कि 5 से 21 जून तक महाभियान, 7 बड़े कार्यक्रम होगें। श्री पंवार ने

महाभियान की रूपरेखा रखते हुए बताया कि पीएम मोदी के 12 वर्ष पूर्ण होने पर जिले भर में 5 से 21 जून तक विशेष कार्यक्रम होंगे। इसके लिए अलग-अलग कार्यक्रमों के प्रभारी भी नियुक्त किए गए हैं। उन्होंने बताया कि 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर जिला-मंडल स्तर पर पौधरोपण, 8 से 14 जून तक विशेष जनसम्पर्क अभियान के तहत घर-घर संपर्क कर सरकार की योजनाओं की जानकारी, 11 से 12 जून तक मीडिया संवाद के माध्यम से केंद्र सरकार की 12 साल की उपलब्धियां बताई जाएंगी, 12 से 18 जून तक जन कल्याण शिविरों का आयोजन व मोदी सरकार की 12 वर्षों की उपलब्धियों पर प्रदर्शनी, 15 से 18 जून तक विभिन्न सभागार बैठकों का आयोजन, 19 से 20 जून तक प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने हेतु कार्यशालाएं तथा 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर बूथ स्तर तक सामूहिक योग कार्यक्रम जिले में आयोजित किए जाएगें। अभियान की प्रस्तावना रखते हुए कार्यक्रम के जिला संयोजक कृष्णा गायकी ने कहा कि प्रदेश नेतृत्व के निर्देशो पर जो महत्वपूर्ण कार्यक्रम में मोदी जी के विकास विश्वास और जनकल्याणकारी योजनाओं के अनवरत 12 वर्षो से जुडे पखवाडे को हमे समन्वय और संवाद के साथ नवाचार करते हुए शानदार तरीके से संपन्न करने है। कार्यशाला को संबोधित करते हुए जिला महामंत्री कमलेश सिंह ने संपन्न हुए कार्यक्रमो की समीक्षा करते हुए आगामी कार्यक्रमो में शक्ति केन्द्र को मंडल और बूथ मजबूत कडी बताते हुए मासिक बैठको के लिए बेहतर कार्ययोजना सामने रखी। कार्यशाला को किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष राघवेन्द्र राजपुत ने संबोधित करते हुए कहा कि केन्द्र एवं राज्य निर्देशित कार्यक्रमो को मतदान केन्द्र तक सफल कराने की महती जिम्मेदारी हम सबकी है। जिसे हमें भव्यता के साथ उत्सव के रूप में संपन्न करना है। कार्यशाला में विधायक मुलताई चंद्रशेखर देशमुख, विधायक आमला डा.योगेश पंडाग्रे, विधायक घोडाडोंगरी गंगा उइके, जिला महामंत्री डा.महेन्द्रसिंह चौहान मंचासीन रहे। कार्यक्रम का संचालन अभियान के जिला सह संयोजक जगदीश पंवार ने एवं अंत में आभार टोली सदस्य देवीसिंह ठाकुर ने व्यक्त किया। कार्यशाला में विधायक, जिला पदाधिकारी, मंडल प्रभारी, मोर्चा जिलाध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष गण विशेष रूप से मौजूद रहे।

डेविड धवन

45 साल बाद विदाई की बेला

हिंदी सिनेमा के इतिहास में कुछ ऐसे फिल्मकार हुए हैं, जिन्होंने दर्शकों को सिनेमा हॉल तक खींचने के लिए किसी दर्शन का सहारा नहीं लिया, बल्कि शुद्ध मनोरंजन को अपना हथियार बनाया। इस लिस्ट में एक बड़ा नाम आता है 'किंग ऑफ कॉमेडी' डेविड धवन का। करीब 45 सालों से लगातार दर्शकों के चेहरों पर मुस्कान बिखेरने वाले इस दिग्गज निर्देशक ने अब अपने लंबे और सुनहरे फिल्मी सफर को विराम देने की इच्छा जाहिर की।

डेविड धवन के संन्यास लेने की इस घोषणा ने बॉलीवुड के एक पूरे युग के अवसान की आहट दे दी है, जिसने कॉमेडी फिल्मों की परिभाषा को हमेशा के लिए बदल कर रख दिया था। इस खबर के सामने आते ही पूरी फिल्म इंडस्ट्री और उनके चाहने वाले बेहद भावुक हो गए हैं। डेविड धवन की आगामी फिल्म 'है जवानी तो इश्क होना है' को उनके निर्देशन करियर की आखिरी फिल्म माना जा रहा है। इस फिल्म से न केवल दर्शकों की उम्मीदें जुड़ी हैं, बल्कि सिनेमाई गलियारों में एक भावुक माहौल भी बन गया है। हाल ही में इस फिल्म के एक कार्यक्रम के दौरान जब डेविड धवन ने अपने दिल की बात साझा की, तो वहां मौजूद हर शख्स की आंखें नम हो गईं। निर्माता-निर्देशक करण जौहर ने भी इस खबर पर अपनी खट्टी-मीठी प्रतिक्रिया देते हुए डेविड धवन को हिंदी सिनेमा की

एक ऐसी संस्था बताया, जिसने खुद में एक पूरा जॉनर तैयार किया।

डेविड धवन का सिनेमा कभी भी गंभीर विमर्श का हिस्सा नहीं रहा, लेकिन उनका मुख्य उद्देश्य हमेशा से थियेटर में बैठे आखिरी कतार के दर्शक को भी ठहाके लगाने पर मजबूर करना था। जब हम डेविड धवन के शानदार सफर की बात करते हैं, तो अभिनेता गोविंदा के जिक्र के बिना यह कहानी हमेशा अधूरी ही रहेगी। नब्बे के दशक में डेविड धवन और गोविंदा की जोड़ी ने सिल्वर स्क्रीन पर जो जादू बिखेरा, उसकी मिसाल आज भी दी जाती है। इन दोनों ने मिलकर बॉलीवुड को एक से बढ़कर एक ब्लॉकबस्टर और कल्ट कॉमेडी फिल्में दीं। इस जोड़ी की शुरुआत 'ताकतवर' जैसी एक्शन फिल्म से हुई थी, लेकिन जल्द ही दोनों ने समझ लिया कि उनका असली हुनर कॉमेडी में है। इसके बाद तो जैसे नंबर वन फिल्मों की एक पूरी बाढ़ सी आ गई। 'कुली नंबर वन', 'हीरो नंबर वन', 'बीवी नंबर वन', 'जोड़ी नंबर वन' और 'शादी नंबर वन' जैसी फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किए।

गोविंदा और डेविड धवन की ट्यूनिंग इतनी लाजवाब थी कि निर्देशक के विजन को अभिनेता बिना कहे पर्दे पर जीवंत कर देते थे। 'राजा बाबू' में नंदू और राजा की जोड़ी हो या 'साजन चले ससुराल' का उलझा हुआ रोमांस, इन फिल्मों ने मध्यवर्गीय परिवारों को सिनेमाघरों का मुरीद बना दिया। 'दीवाना मस्ताना' और 'हसीना मान जाएगी' जैसी फिल्मों में गोविंदा की कॉमिक टाइमिंग और डेविड धवन का चुटीला निर्देशन आज भी टेलीविजन पर दर्शकों को बांधे रखता है। इन दोनों की जोड़ी ने 'बड़े मियां छोटे मियां' में अमिताभ बच्चन के साथ मिलकर जो धमाल मचाया, उसने साबित कर दिया कि जब मनोरंजन की बात आएगी, तो डेविड धवन का कोई सानी नहीं है। इस जोड़ी की आखिरी बड़ी फिल्म 'पार्टनर' थी, जिसमें सलमान खान के साथ मिलकर उन्होंने एक बार फिर बॉक्स ऑफिस को हिलाकर रख दिया था।

गोविंदा के अलावा डेविड धवन ने हिंदी सिनेमा के अन्य दिग्गज कलाकारों के साथ भी बेहतरीन काम किया। उन्होंने ऋषि कपूर और अनिल कपूर के साथ 'बोल राधा बोल' और 'लोफर' जैसी मनोरंजक फिल्में बनाईं। सलमान खान के साथ उनका तालमेल 'जुड़वा' और 'मुझसे शादी करोगी' जैसी सुपरहिट फिल्मों में साफ दिखाई दिया, जिसने सलमान के करियर को एक नया कॉमिक आयाम दिया। संजय दत्त के साथ 'आंदोलन' और अक्षय कुमार के साथ 'मिस्टर एंड मिसेज खिलाड़ी' बनाकर उन्होंने दिखाया कि वे किसी भी बड़े स्टार से उसकी बेहतरीन कॉमिक टाइमिंग निकलवाने में माहिर हैं।

डेविड धवन के सिनेमा की सबसे बड़ी खूबी यही थी कि उनकी फिल्मों में लॉजिक भले ही कम हो, लेकिन मैजिक हमेशा भरपूर होता था। कादर खान की बेमिसाल कशिश, शक्ति कपूर के अजीबोगरीब किरदार और सतीश कौशिक का लाजवाब अभिनय डेविड धवन की फिल्मों की रीढ़ हुआ करते थे। समय बदला और डेविड धवन ने बदलते दौर के साथ खुद को भी ढाला। अपने करियर के आखिरी पड़ाव में उन्होंने अपने बेटे वरुण धवन के साथ मिलकर नई पीढ़ी का मनोरंजन किया। वरुण धवन के साथ उन्होंने 'मै तेरा हीरो', 'जुड़वा 2' और 'कुली नंबर वन' के रीमेक पर काम किया। अब उनकी आगामी फिल्म 'है जवानी तो इश्क होना है' में भी वरुण धवन मुख्य भूमिका में नजर आने वाले हैं।

अगर यह फिल्म वास्तव में डेविड धवन के करियर का आखिरी अध्याय साबित होती है, तो यह केवल एक निर्देशक का सिनेमा से दूर जाना नहीं होगा। यह बॉलीवुड के उस सुनहरे, रंग-बिरंगे और हंसते-मुस्कुराते दौर के अंत की शुरुआत होगी, जहां सिनेमा का मतलब सिर्फ और सिर्फ तनावमुक्त होकर मुस्कुराना होता था। डेविड धवन ने अपने 45 साल के सफर में जो यादें, जो गाने और जो संवाद दर्शकों को दिए हैं, वे आने वाली कई पीढ़ियों को गुदगुदाते रहेंगे। फिल्म इंडस्ट्री भले ही उन्हें विदाई दे रही है, लेकिन दर्शकों के दिलों में वे हमेशा 'नंबर वन' निर्देशक के रूप में अमर रहेंगे।

रियल बॉक्स

'विजय' की जीत से सिनेमा की सत्ता मजबूत

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

तमिलनाडु की राजनीति को वहां की फिल्म संस्कृति देश के अन्य राज्यों से अलग बनाती है। यहां सिनेमा और राजनीति का रिश्ता दशकों पुराना है। द्रविड़ आंदोलन के समय से ही फिल्मों का इस्तेमाल राजनीतिक विचारधारा को जनता तक पहुंचाने के लिए किया गया। उस दौर में फिल्मों के संवाद केवल मनोरंजन नहीं थे, बल्कि सामाजिक संदेश और राजनीतिक चेतना के वाहक बन चुके थे। सीएन अन्नादुरई और एम करुणानिधि जैसे नेताओं ने फिल्मों की पटकथाओं और संवादों के जरिए द्रविड़ विचारधारा को मजबूत किया। तमिल अस्मिता, सामाजिक न्याय और हिंदी विरोध जैसे मुद्दे फिल्मों में खुलकर दिखाई देने लगे। यही वह समय था जब सिनेमा तमिल राजनीति का सबसे बड़ा माध्यम बन गया।

इसी जमीन पर उभरे एमजी रामचंद्रन, जिन्हें जनता केवल अभिनेता नहीं, मसीहा मानने लगी थी। फिल्मों में उनका किरदार गरीबों के रक्षक, ईमानदार नेता और अन्याय के खिलाफ लड़ने वाले नायक का होता था। धीरे-धीरे लोगों ने परदे और वास्तविक जीवन के बीच का फर्क मिटा दिया। जब एमजीआर राजनीति में आए तो जनता ने उन्हें उसी भरोसे के साथ स्वीकार किया, जैसा फिल्मों में करती थी। यही कारण था कि वे तमिल राजनीति के सबसे प्रभावशाली नेताओं में शामिल हो गए। एमजीआर के बाद जे जयललिता ने इस विरासत को संभाला। वे भी फिल्मों की लोकप्रिय अभिनेत्री थीं और एमजीआर की राजनीतिक उत्तराधिकारी बनीं। जयललिता ने अपने स्टारडम को 'अम्मा' की भावनात्मक छवि से जोड़ा। उन्होंने कल्याणकारी योजनाओं और मजबूत नेतृत्व के जरिए जनता के बीच गहरी पकड़ बनाई। तमिल राजनीति में यह पहली बार नहीं था, जब किसी अभिनेता ने सत्ता हासिल की। लेकिन, जयललिता ने यह साबित किया कि फिल्मी लोकप्रियता अगर राजनीतिक रणनीति से जुड़ जाए तो वह लंबे समय तक सत्ता कायम रख सकती है।

तमिल समाज में फिल्मी सितारों की लोकप्रियता केवल ग्लैमर की वजह से नहीं होती। यहां अभिनेता आम आदमी की आकांक्षाओं और संघर्षों के प्रतिनिधि बन जाते हैं। तमिल फिल्मों में नायक अक्सर भ्रष्ट व्यवस्था से लड़ता है, गरीबों के लिए आवाज उठाता है और सामाजिक न्याय की बात करता है। यही छवि जनता के मन में गहरे उतर जाती है। इसलिए जब वही अभिनेता राजनीति में आते हैं, तो लोग उन्हें वास्तविक जीवन का नायक मानने लगते हैं। इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए अब विजय थलापति राजनीति में सक्रिय हुए हैं। विजय पिछले दो दशकों से तमिल सिनेमा के सबसे बड़े सुपर स्टारों में गिने जाते हैं। उनकी फिल्मों में व्यवस्था विरोध, युवा आक्रोश और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दे बार-बार दिखाई देते रहे। उनकी लोकप्रियता केवल परदे तक सीमित नहीं है; उनके प्रशंसकों का वृहद नेटवर्क पूरे तमिलनाडु में फैला। इसी फैन क्लब ने राजनीतिक कार्यकर्ताओं का रूप ले लिया।

तमिलनाडु का वोटर राजनीतिक रूप से जागरूक माना जाता है। वह भावनाओं से प्रभावित जरूर होता है, लेकिन पूरी तरह भावुक नहीं होता। यही वजह है कि रजनीकांत जैसी अपार लोकप्रियता रखने वाले अभिनेता भी राजनीतिक जमीन मजबूत नहीं कर सके। जीत के बाद अब विजय थलापति के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वे अपनी फिल्मी छवि को असल राजनीतिक नेतृत्व में कैसे बदलते हैं। उन्हें यह साबित करना होगा कि वे केवल स्टार नहीं, बल्कि प्रशासनिक दृष्टि रखने वाले नेता भी हैं। रोजगार, शिक्षा, उद्योग, भाषा और क्षेत्रीय अस्मिता जैसे मुद्दों पर उनकी स्पष्ट नीति ही उनकी नेतृत्व सफलता तय करेगी।

विजय की लोकप्रियता को लेकर सबसे दिलचस्प बात यह है कि उन्होंने युवाओं के बीच अलग तरह की पहचान बनाई है। आज का तमिल युवा सोशल मीडिया से जुड़ा है। वह पारंपरिक राजनीति से कुछ हद तक निराश भी लगता है। ऐसे समय में विजय ने खुद को एक वैकल्पिक नेतृत्व के रूप में पेश किया। उनकी सभाओं में उमड़ती भीड़ केवल फिल्मी दीवानगी नहीं, बल्कि बदलाव की उम्मीद भी दर्शाती है। द्रविड़ मुनेत्र कड़गम और अन्य द्रविड़ दल लंबे समय तक यह मानते रहे कि तमिल राजनीति केवल वैचारिक और जातीय समीकरणों पर टिकी हुई है। लेकिन, विजय ने एक बार फिर यह दिखा दिया कि आज की राजनीति में भावनात्मक जुड़ाव, सोशल मीडिया प्रभाव और सेलिब्रिटी अपील भी बड़ी ताकत बन चुका है। यही कारण है कि विजय की राजनीतिक एंट्री ने तमिल राजनीति में नई बेचैनी पैदा कर दी।

हालांकि, राजनीति केवल लोकप्रियता का खेल नहीं है। चुनाव जीतने के लिए मजबूत संगठन, स्पष्ट विचारधारा और सामाजिक समीकरणों की समझ भी जरूरी है।

फिर भी यह मानना पड़ेगा कि विजय ने तमिल राजनीति में एक नई ऊर्जा तो पैदा की है। उनकी भाषा अपेक्षाकृत संतुलित है। वे खुद को पारंपरिक राजनीतिक संघर्षों से थोड़ा अलग रखते हैं। उन्होंने युवाओं और मध्यम वर्ग को आकर्षित करने की कोशिश की और इसमें सफल भी रहे। वे जनता के बीच भरोसा कायम रखने में सफल रहे, पर क्या अब आने वाले वर्षों में तमिल राजनीति का समीकरण बदल सकता है! तमिलनाडु की राजनीति का फिल्मी चरित्र भारतीय लोकतंत्र की सबसे दिलचस्प घटनाओं में से एक है। यहां सिनेमा केवल मनोरंजन उद्योग नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन का हिस्सा रहा है। परदे पर दिखने वाला नायक जनता की उम्मीदों का प्रतीक बन जाता है और फिर वही छवि राजनीति में उसकी ताकत बनती है। इतना तय है कि तमिलनाडु में सिनेमा और राजनीति का रिश्ता अभी खत्म नहीं हुआ। वहां जनता आज भी अपने नायक को परदे से उठाकर सत्ता के सिंहासन तक पहुंचाने की ताकत रखती है और विजय थलापति को मिली जीत इसी ताकत का प्रतीक है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सौरव गांगुली बनकर छाए राजकुमार राव

इन दिनों राजकुमार राव अपने नए किरदार को लेकर सुर्खियों में हैं। वह भारतीय क्रिकेट के दिग्गज सौरव गांगुली की जिंदगी को बड़े पर्दे पर उतारने की तैयारी में जुट गए हैं। उनकी आने वाली फिल्म 'दादा : द सौरव गांगुली स्टोरी' की शूटिंग इन दिनों कोलकाता में चल रही है। इसी दौरान सेट से कुछ तस्वीरें सोशल मीडिया पर सामने आ गई हैं। लीक हुई तस्वीरों में राजकुमार राव को इडेन गार्डन में शूटिंग करते देखा गया। लाल शर्ट और काले ट्राउजर में उनका लुक काफी हद तक सौरव गांगुली से मेल खाता नजर आया। गंभीर चेहरे और आत्मविश्वास से भरे अंदाज ने फैंस की उत्सुकता और बढ़ा दी है। सोशल मीडिया पर कई यूजर्स ने उनकी तारीफ करते हुए कहा कि राजकुमार इस किरदार के लिए बिल्कुल फिट दिखाई दे रहे हैं।

फिल्म का निर्देशन विक्रमादित्य मोटवानी कर रहे हैं, जो अपने अलग अंदाज की फिल्मों के लिए पहचाने जाते हैं। फिल्म में तान्या मानिकतला भी अहम भूमिका में नजर आएंगी। वे सौरव गांगुली की पत्नी डोना गांगुली का किरदार निभा रही हैं। कहानी में क्रिकेट के साथ-साथ सौरव और डोना की प्रेम कहानी को भी खास जगह दी जाएगी। फिल्म में साधारण गलियों से निकलकर भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान बनने तक सौरव गांगुली के संघर्ष, जुनून और सफलता की यात्रा को सिनेमाई अंदाज में पेश किया जाएगा।

मीना कुमारी की तनहाइयां, बशीर बद्र के शेर

उर्दू शायरी की दुनिया के चमकते सितारे बशीर बद्र अब इस दुनिया में नहीं रहे। अपने नर्म एहसास, मोहब्बत और तन्हाई को शब्दों में पिरोने वाले बशीर बद्र सिर्फ साहित्य जगत ही नहीं, बल्कि बॉलीवुड की दुनिया में भी बेहद लोकप्रिय रहे। दिग्गज अभिनेत्री मीना कुमारी उनकी शायरी की दीवानी थीं। वे खुद 'नाज़' नाम से शायरी लिखा करती थी और अपने अकेले पलों में बशीर बद्र के अशआर पढ़ा करती थीं। 1960 के दशक में उनका एक शेर मीना कुमारी को इतना पसंद आया कि उन्होंने उसे अपने हाथों से लिखकर एक प्रतिष्ठित पत्रिका को प्रकाशन के लिए भेजा था। 'उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो, न जाने किस गली में जिंदगी की शाम हो जाए।'

कहा जाता है कि मीना कुमारी अपनी निजी डायरी में भी बशीर बद्र के कई शेर दर्ज करती थीं। यही वजह है कि दोनों का रिश्ता कभी औपचारिक मुलाकातों से नहीं, बल्कि शब्दों और एहसासों से जुड़ा रहा।

बशीर बद्र का सिनेमा से रिश्ता सिर्फ उनकी गजलों तक सीमित नहीं था। उनके बेटे नुसरत बद्र ने भी बॉलीवुड में बतौर गीतकार खास पहचान बनाई। देवदास के चर्चित गीत डोला रे डोला, मार डाला और 'सिलसिला ये चाहत का' जैसे गानों के बोल नुसरत बद्र ने ही लिखे थे। कोई फरियाद, कभी यूं भी आ मेरी आंख में और 'न जी भर के देखा' जैसी रचनाएं आने वाली पीढ़ियों तक उनकी याद को जिंदा रखेंगी।

रूपहले पर्दे पर सूखे की त्रासदी

अशोक जोशी

हमारे देश में सूखा केवल प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि सामाजिक और मानवीय त्रासदी भी रहा है। हर वर्ष देश का कोई न कोई हिस्सा पानी की कमी, फसल बर्बादी और किसानों की बदहाली

से जूझता दिखाई देता है। विकासशील देशों में सूखा ऐसी समस्या है, जिसने गांवों की जिंदगी, किसानों की अर्थव्यवस्था और आम जनजीवन को गहराई से प्रभावित किया है। यही कारण है कि भारतीय सिनेमा, खासकर हिंदी फिल्मों ने भी समय-समय पर इस त्रासदी को अपने कथानकों में जगह दी।

हिंदी फिल्मों में सूखे को कभी प्रतीकात्मक रूप में दिखाया गया तो कभी बेहद यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया गया। कई फिल्मों में फटी हुई जमीन, आसमान की ओर टकटकी लगाए किसान और गांव के ऊपर मंडराते गिद्धों के दृश्य केवल वातावरण बनाने के लिए इस्तेमाल किए गए। लेकिन, कुछ फिल्मकार ऐसे भी रहे जिन्होंने सूखे को केवल दृश्य प्रभाव तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे किसानों के संघर्ष, गरीबी, शोषण और सामाजिक विषमता से जोड़कर गहरी संवेदना के साथ पर्दे पर उतारा।

सिनेमा में यदि सूखे और किसान जीवन के सबसे प्रभावशाली चित्रण की बात की जाए तो बिमल रॉय की फिल्म 'दो बीघा जमीन' का नाम सबसे पहले लिया जाता है। 1953 में प्रदर्शित यह फिल्म भारतीय समानांतर सिनेमा की आधारशिला मानी जाती है। बलराज साहनी, निरूपा राय और रतन कुमार अभिनीत इस फिल्म में एक गरीब किसान शंभू महतो की कहानी दिखाई गई है, जो सूखे और कर्ज के कारण जमींदार के चंगुल में फंस जाता है। अपनी जमीन बचाने के लिए वह शहर में रिक्शा चलाने तक मजबूर हो जाता है। फिल्म में गांव की सूखी धरती और किसान की बेबसी इतनी सजीव थी कि दर्शकों के साथ समीक्षक भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। इस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ फिल्म और निर्देशक के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार मिला, वहीं कान फिल्म समारोह में भी इसकी सराहना हुई।

इसके बाद मेहबूब खान की कालजयी फिल्म 'मदर इंडिया' ने ग्रामीण भारत की पीड़ा को बड़े कैनवास पर प्रस्तुत किया। यह फिल्म मूल रूप से एक मां और उसके अपराधी बेटे के संघर्ष की कहानी है, लेकिन इसके भीतर भारतीय गांवों की सामाजिक संरचना, कर्ज, बाढ़, सूखा और किसानों की मुश्किलों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण दिखाई देता है। नर्गिस, सुनील दत्त और राजेंद्र कुमार अभिनीत इस फिल्म में खेतों की बर्बादी और किसानों की विवशता दर्शकों को भीतर तक झकझोर देती है। यही वजह थी कि 'मदर इंडिया' केवल मनोरंजन नहीं रही, बल्कि भारतीय ग्रामीण जीवन का दस्तावेज बन गई। फिल्म को फिल्मफेयर के कई पुरस्कार मिले और यह ऑस्कर के लिए नामांकित होने वाली पहली हिंदी फिल्म बनी।

सत्तर के दशक में समानांतर सिनेमा का दौर शुरू हुआ तो गांव, गरीबी और किसानों के मुद्दे एक बार फिर गंभीरता से

फिल्मों में उभरने लगे। श्याम बेनेगल ने 'अंकुर' जैसी फिल्म बनाकर सामंती व्यवस्था और आदिवासी किसानों के शोषण को सूखे की पृष्ठभूमि में चित्रित किया। शबाना आजमी के दमदार अभिनय से सजी यह फिल्म ग्रामीण भारत की कठोर सच्चाइयों को सामने लाती है। इसी दौर में आई 'मंथन' भी गांवों की समस्याओं, सूखे और किसानों की बदहाली का संवेदनशील चित्रण करती है।

फिल्मों के महान सितारे देव आनंद को आमतौर पर शहरी रोमांस और आधुनिक युवा की कहानियों के लिए जाना जाता है। लेकिन, 1965 में उन्होंने अपने भाई विजय आनंद के निर्देशन में 'गाइड' जैसी क्लासिक फिल्म बनाकर दर्शकों को चौंका दिया। आरके नारायण के उपन्यास पर आधारित यह फिल्म नारी स्वतंत्रता और आध्यात्मिकता के कारण चर्चित रही, लेकिन इसके भीतर सूखे की भयावहता भी गहराई से मौजूद थी। राजस्थान की पृष्ठभूमि पर बनी इस फिल्म में गांव के लोग एक साधारण इंसान को संत मान लेते हैं और विश्वास करते हैं कि उसके उपवास से बारिश होगी तथा सूखा समाप्त हो जाएगा।

फिल्म में सूखे की स्थिति को बहुत प्रभावशाली ढंग से फिल्माया गया था। इसका गीत 'अल्लाह मेघ दे, पानी दे' दर्शकों की संवेदनाओं को छू गया था। दिलचस्प संयोग यह भी था कि जिस समय फिल्म रिलीज हुई, उसी दौरान देश के कई हिस्से सूखे की मार झेल रहे थे। शायद यही कारण था कि दर्शक फिल्म से गहराई से जुड़ गए। इंदौर से जुड़ा एक रोचक प्रसंग भी इस फिल्म के साथ याद किया जाता है। कहा जाता है कि जब 'गाइड' की सफलता के सौ दिन पूरे होने पर देव आनंद इंदौर आए, तब शहर लंबे समय से सूखे की स्थिति से गुजर रहा था। उनके आगमन के दिन अचानक झमाझम बारिश हुई और लोगों ने इसे शुभ संयोग माना। 'गाइड' को सर्वश्रेष्ठ फिल्म, अभिनेता, अभिनेत्री और निर्देशक सहित कई फिल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त हुए।

नई पीढ़ी के अभिनेताओं में आमिर खान ने भी सूखे और ग्रामीण संकट को प्रभावशाली ढंग से फिल्मों में प्रस्तुत किया। उनकी फिल्म 'लगान' अंग्रेजी शासन के दौरान सूखे से जूझते गांव और अन्यायपूर्ण लगान व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष की कहानी कहती है। फिल्म में गांव वालों की पीड़ा, सूखी धरती और उम्मीदों का संघर्ष दर्शकों को बांधे रखता है। यह फिल्म अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बेहद सराही गई। इसी दौर में आई 'पीपली लाइव' ने किसान आत्महत्या, सूखा, गरीबी और मीडिया की संवेदनहीनता पर तीखा व्यंग्य किया। फिल्म ने दिखाया कि किस तरह किसानों की त्रासदी भी मीडिया और राजनीति के लिए तमाशा बन जाती है। इसके बाद संजय मिश्रा और रणवीर शौरी अभिनीत 'कड़वी हवा' ने जलवायु परिवर्तन, सूखा और किसानों की बढ़ती परेशानियों को बेहद मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया। बुंदेलखंड की पृष्ठभूमि पर बनी यह फिल्म आधुनिक भारत में पर्यावरण संकट और किसान जीवन की विडंबना को सामने लाती है। वहीं *वेल डन अब्बा* जैसी फिल्म ने पानी की समस्या और सरकारी भ्रष्टाचार पर व्यंग्यात्मक शैली में चोट की।

प्रयोगधर्मी फिल्मकार ख्वाजा अहमद अब्बास ने भी सूखे की समस्या को बेहद गंभीरता से पर्दे पर उतारा। उनकी फिल्म 'दो बूंद पानी' राजस्थान के एक ऐसे गांव की कहानी कहती है जहां लोग पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसते हैं। 1971 में प्रदर्शित इस फिल्म में गंगा सिंह और उसकी पत्नी गौरी के संघर्ष को दिखाया गया है, जो गांव में पानी लाने के लिए बांध निर्माण परियोजना में काम करते हैं। सिमी गरेवाल और जलाल आगा अभिनीत यह फिल्म केवल सूखे की कहानी नहीं थी, बल्कि उम्मीद और संघर्ष की कहानी भी थी। ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म होने के कारण इसकी गंभीरता और अधिक प्रभावशाली बन गई थी।

दरअसल सिनेमा ने समय-समय पर सूखे को केवल प्राकृतिक आपदा के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक अन्याय, गरीबी, किसान शोषण और व्यवस्था की विफलता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। हालांकि कई फिल्मों में सूखे का चित्रण केवल औपचारिकता भर रह गया। लेकिन, कुछ संवेदनशील फिल्मकारों ने इसे समाज की सबसे बड़ी त्रासदियों में से एक मानते हुए गहराई और ईमानदारी के साथ पर्दे पर उतारा। यही कारण है कि दशकों बाद भी दो बीघा जमीन, मदर इंडिया, गाइड, दो बूंद पानी और 'कड़वी हवा जैसी फिल्में केवल सिनेमा नहीं, बल्कि भारतीय समाज के संघर्ष का आईना लगती हैं।

गरमी में 'संवेदनशील' बयान की ठंडक !

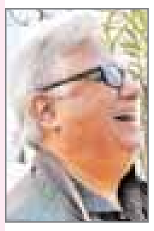

प्रकाश पुरोहित

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

जिस तरह कोविड यानी कोरोना के वक्त हमें समझाया था कि थाली, प्लेट, कटोरी बजाएं, उसी तरह अभी दिल्ली से जानकारी आम की गई है कि गरमी बहुत हो रही है। यह बात देश को पहले पता ही नहीं थी, इसलिए रोज उतना ही पानी पी रहे थे, जितना बाकी दिनों में। हर दिन नहीं होत एक समान... यह बात आम भारतीय को पता ही नहीं थी, इसलिए कम पानी पर ही जिंदा या मर रहे थे !

देश के नाम संदेश में महामानव ने यह समझाया कि जब भी बाहर निकलें तो पानी जरूर साथ रखें। हमारे यहां तो ऐसा पहले कभी हुआ ही नहीं कि बाहर निकले हों और पानी साथ रखा हो। एक बार में ऊंट की तरह इकट्ठा पी लिया और बस ! यह बात जरूर पांच देशों की यात्रा के दौरान ही देखी होगी, वरना जाने से पहले भी बता सकते थे कि मैं तो जा रहा हूं, पानी साथ रखना, जब भी घर से बाहर निकलो।

यह रहस्य ही रह जाता कि बच्चे और बूढ़े, गरमी में क्यों ज्यादा मरते हैं। अब बताया है कि पानी कम पीते हैं, जबकि इन्हें तो औरों से कहीं ज्यादा पीना चाहिए। वैज्ञानिक सत्य है कि जवानों को तो उतनी जरूरत नहीं है पानी की, बूढ़े और बच्चे खुद से तो पानी पी नहीं सकते, इसलिए उन्हें बचाना है तो गरमी के हिसाब से उन्हें पानी देते रहना चाहिए। बार-बार पूछना चाहिए, भले ही घर में तो क्या, पूरे मोहल्ले में पानी न आया हो।

हमें तो अभी तक यही पता था कि गरमी से प्यास लगती है, लेकिन डेढ़ अरब आबादी को पहली बार यह बताया गया कि भीषण गरमी से मतली आती है, (अब कुछ मूर्ख यह भी पूछ सकते हैं कि यह कमबख्त मतली क्या बला है, यह अच्छी है या खराब !) चक्कर आते हैं और थकान होती है। हम कितने लापरवाह हैं कि इतनी उम्र इस जानकारी के बगैर ही निकाल दी। ऐसा गरमी की वजह से होता है, यह जानकार कई लोग मुंह में ऊंगली चबा रहे हैं कि हम कितने अज्ञानी हैं कि हर साल होने वाली मौसम की बीमारी भी पता नहीं।

एक बार सच में ऐसा ही हुआ था कि कोई अनजान व्यक्ति यकायक बेहोश होने लगा। तेज धूप पड़ रही थी, किसी को समझ नहीं आ रहा था कि इसे कैसे होश में लाएं। उसे वहीं सड़क पर लेटा दिया धूप में और सब इंतजार करने लगे कि कभी तो होश में आएगा। उसे फिर कभी होश नहीं आया। अब समझाया गया है कि ऐसे में पेड़ की छांह में ले जाना चाहिए और ठंडा पानी, ओआरएस का घोल पिलाना चाहिए।सरकार ने जगह-जगह यदि पेड़ लगाए हैं और ओआरएस के पैकेट झाड़ पर लटकाए हैं तो चीनी राष्टपति के स्वागत में तो लगाए नहीं हैं। नादानों को पता ही नहीं कि हजार पेड़ काट कर सरकार सैकड़ों पौधे क्यों लगा रही है, ताकि हर झाड़ पर ओआरएस के पैकेट लटकाए जा सकें। कोई बेहोश हुआ नहीं कि फौरन ओआरएस का पैकेट तोड़ा और पिला दिया। बरसों पुराने पेड़ काट कर पौधे इसीलिए तो लगा रहे हैं कि आगे ज्यादा समय तक काम आ सकें। अब ये बातें लोग समझते नहीं हैं तो माननीय मौसम जानकार ने बता दिया !

प्यासे को एक गिलास पानी जरूर दें... दूसरा मांगे तो मना कर दें कि अगले को एक गिलास कहां से मिलेगा ! यह भी बताया है जानकार ने। लोग जगह-जगह प्याऊ तो लगा देते हैं, लेकिन किसी प्यासे को एक गिलास पानी नहीं देते हैं। गिलास हाथ में लिए खड़े होकर और हर एक से पूछना चाहिए कि प्यास तो नहीं लगी है? एक गिलास पानी दूं क्या ? हम पिछड़े भारतीय तो आज भी नेहरू-युग की बातों में ही अटके हैं कि प्यासा खुद पानी तक जाता है। जमाना बदल रहा है, पकड़-पकड़ कर पूछना चाहिए, एक गिलास पानी तो नहीं चाहिए। हो सके तो जबर्दस्ती भी पिला सकते हैं, क्योंकि उसे इस तरह से गिलास भर पानी पीने की आदत नहीं रही होगी।बाकी मौसम में संवेदनशीलता की उतनी जरूरत नहीं होती है, गरमी ही इसकी मांग करती है। बताइए यह रहस्य पता था आज से पहले किसी भारतीय को। पानी हो ना हो, संवेदनशीलता बहुत जरूरी है। कई बार जब आसपास पानी नहीं मिलता है तो यह संवेदनशीलता ही प्राण बचाती है, अपने और दूसरों के भी। इससे यह भी मालूम हुआ कि गरमी व्यक्ति को कठोर बना देती है और पानी होते हुए भी भी वह जरूरतमंद को पानी नहीं देती है, इसलिए तो विद्वानों ने कहा है कि तीसरा विश्व युद्ध (तेल के लिए कितने ही देश लड़ लें, विश्व युद्ध की कैटेगरी में नहीं आते हैं और ना आएंगे) पानी के लिए होगा।

यह कितनी अच्छी बात है कि जब दुनिया पानी के लिए विश्व युद्ध में लगी होगी, हमारे यहां पानी की कमी, किसी को पता नहीं होगी, ठीक आज की तरह ! विरोधी दलों के बहकावे में नहीं आएं, पानी की इफरात है, जैसे गैस सिलेंडर या सस्ते तेल की कोई कमी नहीं है! जब तेल इतना है तो पानी के अकाल की तो बात ही क्या करना। जरूरत इस बात की है कि प्यासे को एक गिलास पानी दें, दूसरा मांगे तो इनकार कर दें कि और भी तो हैं प्यास के मारे, उनका क्या होगा !

खालीपन की पुकार है, मैं क्यों हूँ?

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

आप सोच रहे होंगे कि ख़ुद उम्रदराज हो रही हूं तो यह विषय उठा रही हूं दरअसल मैं 16 बरस के बच्चे से 80 साल के बुजुर्गों की बात कर रही है। भले ही आप कितने भी सकारात्मक हों, जीवन जीने की कला जानते हों, पर एक दिन अचानक खाली सा महसूस करते हो ख़ुद से पूछते हो मैं यह सब क्यों करूँ, क्यों ख़ुद को अच्छा रखूँ, क्यों स्वस्थ रहूँ, क्या मैं नहीं रहूँ तो किसी को कुछ फ़र्क पड़ेगा या कोई मेरी फ़िक्र नहीं करता, कोई मुझे प्यार नहीं करता।

मेरी एक परिचित है जिनकी लड़की 2-3 साल से कमर कस के नीट की तैयारी कर रही थी उसके जीवन का उद्देश्य डॉक्टर बनना था अचानक एक दिन मेज़ पर पेन पटक कर बोली मुझे नीट नहीं देना, माँ चैंक गई वो भी बेटी के साथ ख़्वाब देख रही थी, माँ ने खूब वजह भी पूछी, बार-बार कहती बस अब मेरा मन नहीं पर हुआ क्या ? झुंझला गई, अगर पीछे पड़ोगे तो मैं कुछ कर लूंगी। माँ ने उसकी सहेलियों से पूछा, पता किया, कोई प्रेम संबंध तो नहीं फिर सहम गई क्योंकि अभी हाल ही में एक बड़े ऑफिसर की पुत्री बिना कुछ बताएं रस्सी से झूल गई माँ-बाप शर्मिंदा से हैं, सब उनकी तरफ प्रश्न भरी निगाहों से देख रहे हैं किशोरावस्था में यह प्रश्न अक्सर भविष्य की उलझनों के कारण पैदा होता है। पढ़ाई, कैरियर, भविष्य की चिंता, रिश्ते, तुलना और असफलताओं का दबाव युवा मन को बेचैन कर देता है थका मस्तिष्क कुछ भी ग़लत कर सकता है, सोच भी नकारात्मक हो जाती है उसे अपनी पहचान का भी सोच रहता है, कि वो अभी माँ-बाप के नाम से जाना जाता है।

हमारे एक मित्र है जो ऊर्जा से भरपूर थे, उन्हें घूमना, फिरना, गाना सब पसंद था। अपने बच्चों परिवार के साथ खूब यात्राएं करते बच्चों और पत्नी को खूब सहयोग करते धीरे-धीरे नहीं अचानक एक दिन मौन से हो गये, डॉक्टर ने बताया कि वो अवसाद में चले गये चीजें भूल सी गये, सबसे पूछा गया हाल ही में कोई हादसा हुआ ? सब हैरान थे, थोड़ी देर पहले ही तो पार्टी से हो-हल्ला करके लौटे थे।

मध्यम आयु में जिम्मेदारियों आर्थिक संघर्ष और टूटते संबंधों के बीच व्यक्ति स्वयं को मशीन की तरह जीता महसूस करता होगा पर अपनी धुन में उसे समझ नहीं आता उसे ऐसा क्यों हो रहा है।

हमारे दो तीन परिचित हैं जिनके घर में बहू आई, बेटी की शादी हुई। पाँच-छह महीने में उनके रिश्ते खत्म हो गये तलाक हो गये। इस हादसे को, मैंने देखा सबने अलग-अलग तरीके से हैंडल किया। एक व्यक्ति ने सोचा कोई बात नहीं अच्छा हुआ बाल बच्चे नहीं हुये सहज में लिया। दूसरा व्यक्ति कोर्ट कचहरी के लंबे केस से घबराने लगा था सो निर्णय होते ही चैन की सांस ली और पुनः अपनी व्यस्त दिनचर्या में डूब गया। तीसरी अलगाव की शिकार हुई हमारी एक महिला मित्र। शुरुआत में उन्हें कुछ एहसास नहीं हुआ पर जिस जोश से उन्होंने अपने इकलौते पुत्र का विवाह किया था, सो

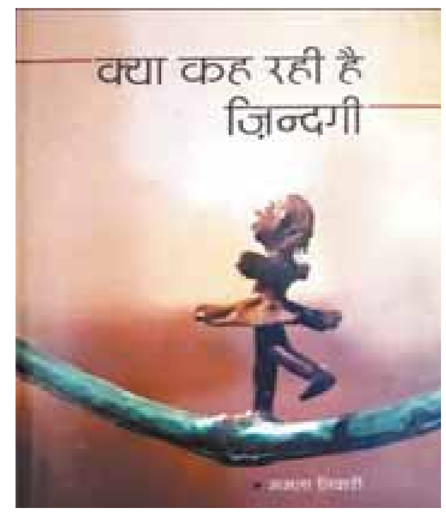

एक, उदासी, बेचैनी, अवसाद उनके जीवन में उतर आया। घड़ी-घड़ी शारीरिक स्वास्थ्य की शिकायत करने लगी जबकि वह मानसिक अवसाद से गुजर रही थीं। अब मैं भी अपनी बात कह दूं, मैं अपने लिखने पढ़ने, अपनी साहित्य की दुनिया, परिवार, दोस्तों के बीच व्यस्त रहती हूं। अचानक बाहर से आए बेटे से कह बैठी अब मेरी क्या जरूरत, मैं क्यों हूँ? उसने तुरंत कहा, माँ, आपको हेल्प की ज़रूरत है। आपको काउंसलिंग सेशंस लेने चाहिए। पर मैंने संकोच से कहा, क्या ये ज़रूरी है? उसने बहुत प्यार से समझाया, इस उम्र में थोड़ी थेरेपी की जरूरत होती है और डॉक्टर से बात करिए। कुछ तनाव चिंता नींद की कमी होती है। मेडिसिन लेने में हर्ज़ नहीं। वाकई उसकी सलाह काम आई। सच है उसने कहा जब हम शारीरिक स्वास्थ्य के लिए इतना सोचते हैं तो मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी कुछ उपाय करना चाहिए। अब अगर मेरी सहेलियों रिश्तेदारों को मदद की आवश्यकता होती है मैं उन्हें भी यह शिक्षा देती हूँ।

दरअसल, वृद्धावस्था में यह प्रश्न और भी गहरा जाता है जब व्यक्ति पीछे मुड़कर जीवन को देखता है और सोचता है उसने जो कुछ पाया, क्या वही जीवन का अर्थ था? जीवन का अर्थ सबके लिए अलग अलग होता है किसी के लिए समाज सेवा, कला साधना, साहित्य, अध्यात्म, प्रेम, स्त्रियों के लिए कुकिंग, घूमना आदि।

बहुधा देखती हूँ परिवार एक विशेष उम्र के बाद स्त्री का रसोई में जाना बंद करवा देता है तब वह स्त्रियाँ जो कुकिंग की शौकीन रहीं बच्चों को अपने हाथ से पका कर खिलाने का लोभ नहीं छोड़ पा रही, उन्हें घर के काम करने दें, उन्हीं चारदीवारियों में उन्होंने जीवन बिताया, घर सजाया उन्हें उनके स्थान से न हटाए। जीवन कोई दौड़ नहीं, अपनी तुलना दूसरों से ना करें। अवसाद आते देख तुरंत उस स्थान से हट जायें। जीवन की एकरसता भंग करें अपने आप को अपने पसंदीदा काम में झौंक दें। कोई वाद्य सीखें, योग, ध्यान, अध्यात्म और नहीं तो दोस्तों के साथ पार्टी, पिकनिक करें। ''लोग क्या कहेंगे'' से मुक्त होकर मित्र बनाएं, छोटी छोटी खुशियों में जीने की वजह तलाशें। मैं जानती हूँ आप सब यह जानते हैं। हम सब एक ही नाव में सवार हैं। तो सच का सामना करें और पूछे ख़ुद से रोज़ और क्या कह रही है जिंदगी?

क्या खोया? क्या पाया?
जमा किया खाते में धन अपार
हज़ार मन अनाज तबाह किया
सेरों खाया, ढेरों पचाया
सालों सो भी लिया,
ले के डकार तृप्ति की सोचा
कि मैंने जीवन जी लिया
हाय! ये मैंने क्या किया?
याद करो,
कितनी सुबह तुमने चिड़ियों की
चहचहाहट सुनीं?
सुनहली धूप में कब तुमने स्नान किया?
शाम के धुंधलके में कब मंत्र पाठ किया?
हसीन रात की मादक गहराईयों में,
कब ग़ज़लों का आनंद लिया?
व्यर्थ के तनावों में उलझ कर,
चंद कड़वे घूँट निगलकर, तुमने सोचा
कि जीवन अमृत पी लिया
हाय ये तुमने क्या किया?
कितनी सुबह फूलों के साथ
बाग़ों में घूमा किये,
कितनी दुपहर गुनगुनाती धूप में
फुरसत से चाय की प्याली के संग जिये।
कितनी शामों में हाथ में हाथ डालकर
सूर्यास्त का मंज़र देखा किये
कितनी रातों में तेरी आँखों से
मुहब्बत के जाम पिये।
अब तक सोच रहे थे कि
जीवन हमने साथ जीया।
हाय! ये हमने क्या किया।

लाल किला बना जनजातीय अस्मिता का महाकुंभ

सांस्कृतिक समागम 2026

डॉ. भूपेन्द्र कुमार सुल्लेरे

भारत की सांस्कृतिक चेतना, जनजातीय अस्मिता और राष्ट्रीय एकात्मता का एक ऐतिहासिक अध्याय 24 मई 2026 को उस समय लिखा गया, जब देश की राजधानी नई दिल्ली स्थित लाल किला में 'सांस्कृतिक समागम 2026' के अंतर्गत जनजातीय समाज का अभूतपूर्व महासंगम आयोजित हुआ। यह आयोजन केवल एक सम्मेलन नहीं था, बल्कि भारत की प्राचीन सभ्यता के मूल संरक्षकों – वनवासियों, जनजातीय समुदायों और लोक संस्कृति के वाहकों – के स्वाभिमान, अस्तित्व और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का विराट उद्घोष था।

इस महाआयोजन में भारत के 550 से अधिक जनजातीय समूहों ने सहभागिता की तथा लगभग 1.50 लाख से अधिक जनजातीय प्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, मातृशक्ति, युवाओं और सांस्कृतिक कलाकारों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस ऐतिहासिक आयोजन का संचालन एवं नेतृत्व जनजाति सुरक्षा मंच के तत्वावधान में किया गया, जिसमें वनवासी कल्याण आश्रम सहित अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम में देशभर से आए जनजातीय समाज के प्रतिनिधियों ने अपने पारंपरिक वेशभूषा, लोकगीत, नृत्य, वाद्य यंत्रों और सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से भारत की विविधता में एकता की अनुपम छवि प्रस्तुत की। यह समागम भारत के उस ऐतिहासिक सत्य को पुनः स्थापित करता है कि जनजातीय समाज केवल 'विकास' का विषय नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता का मूलाधार है। प्रकृति संरक्षण, जल-जंगल-जमीन के संतुलन, सामूहिक जीवन, लोकज्ञान, आयुर्वेदिक परंपराओं और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता की जो धारा आज विश्व खोज रहा है, वह भारत के जनजातीय समाज में हजारों वर्षों से विद्यमान रही है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित अमित शाह ने अपने संबोधन में जनजातीय समाज को भारत की सांस्कृतिक आत्मा बताते हुए कहा कि जनजातीय समुदायों ने भारत की प्रकृति, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना को सदियों तक सुरक्षित रखा है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में भी जनजातीय वीरों का योगदान अद्वितीय रहा है, किंतु इतिहास लेखन में उन्हें पर्याप्त स्थान नहीं मिला। अब भारत उनके गौरव को पुनर्स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा, रानी दुर्गावती, टंट्या भील, सिद्धू-कान्हू, अल्लूरी सीताराम राजू और अनेक जनजातीय वीरों का स्मरण करते हुए कहा कि भारत सरकार जनजातीय समाज के सम्मान, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जनजातीय समाज को उसकी जड़ों से काटने वाली शक्तियों के विरुद्ध सांस्कृतिक जागरूकता और संगठन आवश्यक है।

इस सांस्कृतिक समागम की सबसे प्रेरणादायक विशेषताओं में से एक रही जनजातीय मातृशक्ति की विशाल उपस्थिति। देश के विभिन्न राज्यों से आई हजारों महिलाओं ने पारंपरिक परिधानों और सांस्कृतिक प्रतीकों के साथ कार्यक्रम में भाग लिया। उनके लोकनृत्य, पारंपरिक गीत और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने यह स्पष्ट किया कि भारतीय जनजातीय संस्कृति का वास्तविक संरक्षण महिलाओं के माध्यम से ही संभव हुआ है।

समागम में उपस्थित विभिन्न वक्ताओं ने इस बात पर बल दिया कि जनजातीय समाज के विकास का अर्थ केवल शहरीकरण नहीं होना चाहिए। वास्तविक विकास वह है जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीक और रोजगार के साथ-साथ जनजातीय संस्कृति, भाषा, परंपरा और प्रकृति आधारित जीवन पद्धति का संरक्षण भी सुनिश्चित हो।

वक्ताओं ने चिंता व्यक्त की कि वैश्वीकरण और बाज़ारवाद के प्रभाव में अनेक जनजातीय भाषाएं और लोक परंपराएं विलुप्ति के कगार पर पहुंच रही हैं। ऐसे समय में यह सांस्कृतिक समागम भारत के सांस्कृतिक भविष्य को सुरक्षित करने का एक राष्ट्रीय अभियान बनकर उभरा।

यह आयोजन भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उस स्वरूप को भी सामने लाता है जिसमें विविधता को विभाजन नहीं, बल्कि शक्ति माना जाता है। भारत की जनजातियां किसी 'मुख्यधारा' से अलग नहीं हैं; वे स्वयं भारत की मूलधारा हैं।उनकी परंपराएं, देवी-देवता, प्रकृति पूजा, सामूहिक जीवन और राष्ट्रनिष्ठा भारतीय संस्कृति की आधारशिला हैं।

सांस्कृतिक समागम ने यह स्पष्ट किया कि आधुनिक भारत यदि विश्वगुरु बनने की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है, तो उसे अपने जनजातीय समाज के ज्ञान, जीवनशैली और सांस्कृतिक मूल्यों को केंद्र में रखना होगा।

कट्टरपंथ के खिलाफ वादा करती 'फ्योर्ड'

दृष्टिकोण

❑ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

कान फिल्म फेस्टिवल की अवार्ड जीतने वाली फिल्म 'फ्योर्ड' ने दो खेमे कर दिए हैं। नापसंद करने वालों का कहना है कि बेहतरीन फिल्मों की गैर-मौजूदगी में अवार्ड मिला, पर पसंद करने वालों के पास ढेर कारण हैं।

रोमानिया के डायरेक्टर क्रिस्टियन मुंगियू की फिल्म है। माता-पिता मिहाई (सेबेस्टियन स्टेन) और लिस्बेट (रेनेट रींसवे) पांच बच्चों को रोमानिया से नॉर्वे शिफ्ट करते हैं। दोनों को जल्द ही काम मिल जाता है और टकराव भी होता है।

परिवार की धार्मिक और सख्त लाइफ स्टाइल अलग है। जब टीचर को बच्चे पर चोट के निशान दिखते हैं तो स्कूल नियम लागू करता है। जांच शुरू होती है। परिवार टूट रहा है और इसमें छोटा बच्चा भी शामिल है, उसे स्कूल से हटा दिया जाता है।

फिल्म देखते कई बार हिंदी फिल्म 'मिसेज़ चटर्जी विरुद्ध नॉर्वे' याद आती है। ट्रेलर देखकर ही फिल्म देखने की ख्वाहिश खत्म हो गई थी। क्योर्ड में चीख पुकार नहीं है, आंसू भी चुपचाप बहते हैं। किरदारों को इतना बारीकी से दिखाते हैं कि दिमाग के तार छेड़ सकें, जबकि भावुकता को पहुंच से बाहर रखते हैं। परिवार को हम अलग नजरिए से देखते हैं, सख्त हैं, बाइबिल की पढ़ाई पर जोर देते हैं, जबकि बच्चों को आजादी नहीं देते। यहां तक कि केयर होम में सच्ची हमदर्दी भी धार्मिक रास्ते के बंटवारे से मिलती है। पता चलता है कि देखभाल धर्म से अलग नहीं की जा सकती।

फिल्म देखते कई बार हिंदी फिल्म 'मिसेज़ चटर्जी विरुद्ध नॉर्वे' याद आती है। ट्रेलर देखकर ही फिल्म देखने की ख्वाहिश खत्म हो गई थी। क्योर्ड में चीख पुकार नहीं है, आंसू भी चुपचाप बहते हैं। किरदारों को इतना बारीकी से दिखाते हैं कि दिमाग के तार छेड़ सकें, जबकि भावुकता को पहुंच से बाहर रखते हैं। परिवार को हम अलग नजरिए से देखते हैं, सख्त हैं, बाइबिल की पढ़ाई पर जोर देते हैं, जबकि बच्चों को आजादी नहीं देते। यहां तक कि केयर होम में सच्ची हमदर्दी भी धार्मिक रास्ते के बंटवारे से मिलती है। पता चलता है कि देखभाल धर्म से अलग नहीं की जा सकती।

इस परिवार में सभी ज्यादा धार्मिक हैं और बच्चों को फोन या दूसरी चीजें नहीं देते। हर दिन बाइबल पढ़ते हैं। प्रार्थना रोज का हिस्सा है। जब स्कूल में पियानो पर धार्मिक गाना बजाता है तो उससे कहा जाता है कि वह धर्म का प्रचार न करे, भले ही वह सिर्फ संगीत बजा रहा हो।

आखिरी फैसले का बोझ देखने वालों पर डालते हैं और मजबूर करते हैं कि क्या ये घरेलू मुश्किलें सच में नैतिक कमी हैं। वह ऐसी नॉर्वे सरकार को दिखाते हैं जो बच्चों के लिए उतनी फिक्रमंद नहीं लगती। फिल्म ठंडे दिमाग से की जांच में बदल जाती है कि क्या अलग दुनिया को देखने का नजरिया ऐसे समाज में अपराध है, जो खुद को बांटने पर गर्व करता है। इस परिवार के 'बाहरी' होने के एकदम उलट स्कूल प्रिंसिपल की लड़की को पेश करते हैं, जिसे पूरी आजादी है, माता-पिता की बेपरवाही में छोड़ दिया है। ऐसी बात जो गंभीर नैतिक हिसाब-किताब को बुलाती है- परिवार का कौन-सा तरीका ज्यादा लापरवाह है? हम सच में समझने के बजाय लोगों को खांचे में फिट करने लगते हैं? इस सवाल का कोई जवाब नहीं है और 'फ्योर्ड' के जरिए मुद्दों को हमारे साथ मिलकर यह पता लगा रहे हैं कि उनकी कहानी सामने आने पर कैसा महसूस करते हैं।

'फ्योर्ड' ऐसी फिल्म है, जो सोचने पर मजबूर करती है। कान फिल्म फेस्टिवल में पाम डी और विनर का अवार्ड लेते रोमानियाई लेखक और फिल्म डायरेक्टर क्रिस्टियन मुंगियू ने कहा- यह फिल्म किसी भी तरह के कट्टरपंथ के खिलाफ वादा है। यह उन चीजों के लिए वादा है, जिन्हें हम बहुत, बहुत बार इस्तेमाल करते हैं, जैसे सहनशीलता, सामूहिकता और दया। ये प्यारे शब्द हैं, इन्हें ज्यादा इस्तेमाल करने की जरूरत है।